सुबोध
अंक-विद्या

डा॰ नारायणदत्त श्रीमाली

विषय-सूची

प्रवेश

अंक-विज्ञान आज के युग की श्रेष्ठतम उपलब्धि है, जिसके प्रयोग से व्यक्ति जहाँ अपने भूतकाल पर दृष्टि डाल सकता है, वहाँ भविष्यकाल को भी पहचान सकता है, अपने भविष्य को जान सकता है, और तदनुकूल अपने-आपको ढालकर जीवन सुखी, सफल एवं समृद्ध बना सकता है।

अंक-विज्ञान जितना प्राचीन विज्ञान है उतना ही नवीन भी। प्राचीन इसलिये कि इसकी जड़ें सुदूर भारतीय महर्षियों के ज्ञान तक पहुँची हुई हैं, और नवीन इसलिये कि आजकल जिस रूप में इसका अध्ययन-मनन हो रहा है, वह पाश्चात्य दृष्टिकोण, मत, एवं विचारों से अनुप्राणित है।

यह पूरा विश्व एक अदृश्य शक्ति से संचालित है। विश्व मूल रूप में पाँच तत्त्वों से निर्मित है—१. अग्नि, २. जल, ३. वायु, ४. पृथिवी और ५. आकाश। दृश्य और अदृश्य जो भी और जिस रूप में भी पदार्थ है, वह इन्हीं पाँच तत्त्वों के मिश्रण से निर्मित है। पदार्थों में भेद इन पाँच तत्त्वों के न्यूनाधिक अनुपात से है, और सभी ग्रह जिनका कि निश्चित प्रभाव मनुष्य पर पड़ता है—इन्हीं पाँच तत्त्वों से निर्मित हैं, और इसलिये महर्षियों ने प्रत्येक ग्रह की जप-संख्या भी अलग-अलग निर्धारित की है, उदाहरणार्थ—

सूर्य	की	७,०००
चन्द्रमा	,,	११,०००

मंगल	की	१०,०००
बुध	"	६,०००
गुरु	"	१६,०००
शुक्र	"	१६,०००
शनि	"	२३,०००

इस जप-संख्याभेद में भी अंक-विज्ञान ही काम कर रहा है। महर्षियों ने प्रारम्भ में मंत्रों के तीन वर्ग निर्धारित किये—(१) २४ अक्षरों वाले, (२) ३२ अक्षरों वाले, तथा (३) ६३ अक्षरों-वाले। इन अक्षरों के मूल में जहाँ अंक-विज्ञान काम कर रहा है, वहाँ यह भी स्पष्ट कर रहा है कि शब्दों और अंकों का घनिष्ठ एवं अटूट संबंध है।

अंक-विज्ञान का उपयोग सृष्टि के आदिकाल से होता आ रहा है। जब भारत में ऋषिसंस्कृति विकसित हुई, तब उन्होंने भी अंकों का महत्त्व समझा, और प्रत्येक कार्य की सिद्धि के लिए अलग-अलग संख्या (मणियों) की माला निर्धारित की, यथा स्वार्थसिद्धि के लिए २७ मणियों की माला, मोक्षप्राप्ति के लिए २५ मणियों की माला, धनप्राप्ति एवं लक्ष्मी-सिद्धि के लिए ३० मणियों की माला, प्रेमिका-प्राप्ति के लिए ५४ मणियों की माला, एवं सर्वकार्य-सिद्धि हेतु १०८ मणियों की माला जपने की व्यवस्था की। प्रत्येक शुभ एवं मांगलिक कार्यों के लिए भी १०८ मणियों की माला की ही स्वीकृति दी।

प्रश्न उठता है कि समस्त शुभ एवं मांगलिक कार्यों के लिए १०८ मणियों की माला जपने की व्यवस्था दी तो क्या इसके पीछे कोई वैज्ञानिक आधार है ? सूक्ष्मता से देखने पर इसके वैज्ञानिक आधार को जानकर ऋषियों की पारदर्शिनी साधना के सामने स्वत: ही सिर झुक जाता है।

ऋषियों ने भी अपने प्रारंभिक काल में ही कालगणना का रहस्य जान लिया था। जीवन के मूलाधार के रूप में उन्होंने सूर्य को पहचाना था, जो एक महीने में एक वृत्त पूरा कर लेता है। खगोलीय वृत्त ३६० अंशों पर आधारित है, और इसकी कलाएँ ३६० × ६० = २१६०० स्पष्ट होती हैं। सूर्य चूँकि छः महीने उत्तरायण में तथा छः महीने दक्षिणायन में रहता है, अत: एक वर्ष में दो अयन होने से एक अयन का सार २१६०० ÷ २ = १०८०० सिद्ध होता है। गणितीय पद्धति से शेष शून्यों को छोड़ दिया जाय तो शुद्ध संख्या १०८ बची रहती है, इसीलिये महर्षियों ने १०८ मणियों की माला जपने का विधान करके यह निर्देश दिया कि उत्तर-अयन में सूर्य होने पर सव्य तरीके से तथा दक्षिण-अयन में सूर्य होने पर अपसव्य तरीके से माला फेरनी चाहिए, जिससे पूर्ण कार्यसिद्धि हो।

प्रत्येक समानधर्मा वस्तुएँ परस्पर खिंचती हैं। जंगल में बकरे या भैंसे की गंध पाकर शेर उसकी ओर खिंचता है। यदि जंगल में चीनी बिखरी हो तो चींटियाँ ही उस ओर आकर्षित होंगी, शेर नहीं; ठीक इसी प्रकार फूलों की सुगन्ध से भ्रमर ही उस ओर खिंचेंगे, चींटे या चींटियाँ नहीं। अत: यह स्पष्ट है कि प्रत्येक समानधर्मा पदार्थ दूसरे समानधर्मा पदार्थ या प्राणी को अपनी ओर आकर्षित करेगा। ठीक इसी प्रकार प्रत्येक अंक अपने समानधर्मा अंक को अपनी ओर आकर्षित करेगा। जिन व्यक्तियों का मूलांक १ होगा, वे उन व्यक्तियों के सहज ही विश्वासपात्र या मित्र बन सकेंगे, जिनका मूलांक १ है। विरोधी अंकों की मित्रता नहीं निभ सकती। इस प्रकार देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि अंकों का महत्त्व एवं उपयोग समझने से हम यह जान लेंगे कि कौन व्यक्ति हमारे लिये उपयोगी है ? किसका विश्वास आँख मूँदकर किया जा सकता है ?

निश्चय ही अंक-ज्योतिष या अंक-विज्ञान के द्वारा ही हम भविष्य को पहचान सकते हैं कि, कब अधिकारी से मिलें ? किस मूलांकवाले व्यक्ति को प्रेमी या प्रेमिका बनायें, जिससे जीवन

निर्विघ्न एवं सुखी हो सके ? किस व्यक्ति को व्यापार में साझीदार या पार्टनर बनावें जिससे व्यापार उन्नति की ओर अग्रसर होता रहे ? प्रेमिका को मिलने का कौन-सा समय दिया जाय ? किस दिन किस रंग के वस्त्र पहनें, जिससे कार्यसिद्धि हो ही ? अधिकारी या फ़र्म को किस दिन पत्र लिखा जाय, जिससे मनोवांछित सफलता मिल जाय ? ये और ऐसे सैकड़ों प्रश्नों का उत्तर अंक-विज्ञान के पास है, जिसे जानकर, उसके उपयोग से हम शीघ्रता से सफलता की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

अंक और ग्रह

अंक अपने-आप में असीम शक्ति छिपाये हुए हैं। जहाँ उनके प्रयोग से भविष्य की अतल गहराइयों में प्रकाश की किरणें फेंकी जा सकती हैं, वहाँ ये अपने-आप में ग्रहों के व्यापकत्व को भी समेटे हुए हैं। निम्नलिखित अंक निम्नप्रकारेण ग्रहों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन ग्रहों में सूर्य और चन्द्रमा से संबंधित दो-दो अंक हैं जिनमें एक ऋणात्मक और दूसरा धनात्मक है। अन्य सभी ग्रहों का प्रतिनिधित्व एक-एक अंक करता है—

ग्रह	अंक	
सूर्य	१	धनात्मक
	४ —	ऋणात्मक
चंद्र	७ —	धनात्मक
	२	ऋणात्मक
मंगल	९	धनात्मक
बुध	५	धनात्मक
गुरु	३	धनात्मक
शुक्र	६	धनात्मक
शनि	८	धनात्मक

कुछ विद्वान् हर्शल का अंक चार, तथा वरुण (Neptune) का अंक ७ मानते हैं, पर गहराई में जाने पर यही स्पष्ट होता है कि चार अंक सूर्य का ऋणात्मक तथा सात अंक चन्द्र का धनात्मक अंक है, और इनपर भी ग्रहों, सूर्य तथा चन्द्रमा का ही अधिकार ज्यादा देखा जाता है। इसी प्रकार बारों के

आधिपत्य को देखें तो निम्न चित्र स्पष्ट होता है—

वार	ग्रह	अंक
रविवार	सूर्य	१
सोमवार	चन्द्रमा	७
मंगलवार	मंगल	९
बुधवार	बुध	५
गुरुवार	गुरु	३
शुक्रवार	शुक्र	६
शनिवार	शनि	८

अब प्रश्न उठता है कि क्या राशियों पर भी इन अंकों का प्रभुत्व है? भारतीय ज्योतिष में मान्य बारह राशियाँ हैं, उनके नाम, उनके अधिपति-ग्रह तथा उनके प्रतिनिधि-अंक नीचे स्पष्ट किये जा रहे हैं—

राशि	अधिपति ग्रह	अधिपति अंक
मेष	मंगल	९
वृष	शुक्र	६
मिथुन	बुध	५
कर्क	चन्द्रमा	७
सिंह	सूर्य	१
कन्या	बुध	५
तुला	शुक्र	६
वृश्चिक	मंगल	९
धनु	गुरु	३
मकर	शनि	८
कुंभ	शनि	८
मीन	गुरु	३

इस प्रकार अब यदि किसी व्यक्ति की जन्मपत्रिका का अध्ययन करना है, और उसकी जन्मकुण्डली में मेष का सूर्य

वृश्चिक का चन्द्र, कन्या का मंगल, कन्या का बुध, तुला का गुरु, वृष का शुक्र, और कुंभ का शनि हो, तो यह संयुक्त इस प्रकार बनेगा—

मेष का सूर्य = ९ + १

(यहाँ नौ का अंक मेष राशि का है, तथा १ का अंक सूर्य का है।)

९ + १ = १०

वृश्चिक का चन्द्र = ९ + ७ = १६
कन्या का मंगल = ५ + ९ = १४
कन्या का बुध = ५ + ५ = १०
तुला का गुरु = ६ + ३ = ९
वृष का शुक्र = ६ + ६ = १२
कुंभ का शनि = ८ + ८ = १६

कुल योग १० + १६ + १४ + १० + ९ + १२ + १६ = ८७

८७ = ८ + ७ = १५ = १ + ५ = ६

निश्चय ही कुण्डली पर ६ के अंक का सर्वाधिक प्रभाव है, जिसका स्वामी शुक्र है।

एक उदाहरण और लें, जिससे पाठक भली प्रकार समझ जायें।

संबंधित कुण्डली में मेष का शनि, कर्क का चन्द्रमा तथा कर्क राशि का ही शुक्र, सिंह का सूर्य, कन्या राशि का गुरु तथा बुध एवं वृश्चिक राशि का मंगल है। राहु-केतु छायाग्रह होने के कारण इनकी गणना नहीं की जा सकती। एक-दो अंक राशियों के सूचक हैं यथा १ का अर्थ मेष राशि, २ का अर्थ वृष राशि आदि। (देखिए पिछले पृष्ठ पर राशिनाम)

अब यह ज्ञात करना है कि इस प्राणी पर सर्वाधिक किस ग्रह का प्रभाव है—

मेष का शनि	९+८=१७
कर्क का चन्द्रमा	७+७=१४
कर्क का शुक्र	७+६=१३
सिंह का सूर्य	१+१=२
कन्या का बुध	५+५=१०
कन्या का गुरु	५+३=८
वृश्चिक का मंगल	९+९=१८

कुल योग १७+१४+१३+२+१०+८+१८=८२
=८२=८+२=१०=१+०=१

स्पष्टतः जिस प्राणी की यह जन्मकुण्डली है, उसपर एक का अंक सर्वाधिक प्रभाव रखता है, जिसका स्वामी सूर्य है।

आगे प्रत्येक अंक से प्रभावित रंगों का स्पष्टीकरण कर देना आवश्यक है। जिसकी जन्मकुण्डली का जो 'समग्र अंक' हो, उससे संबंधित रंग का रुमाल या वस्त्र पास में रखने से शुभ होता है तथा प्रत्येक कार्य में सहज ही विजय भी मिलती है।

अंक	संबंधित रंग
१	श्याम और लाल मिश्रित
२	सफेद
३	लाल और सफेद मिला हुआ
४	हरित (दूर्वा के समान)
५	पीला
६	सफेद
७	काला
८	नीला
९	विविध मिश्रित रंग

पिछले उदाहरण में जिस प्राणी का 'समग्र अंक' एक आया था, वह जेब में मिलाजुला श्याम और लाल रंग का रुमाल रखे, या इस रंग की टाई पहने तो निश्चय ही वह सफलता के अधिक निकट होगा।

प्रत्येक अंक किसी-न-किसी भावना का प्रबल प्रतिनिधित्व करता है, वह इस प्रकार है—

अंक	भावना
१	आत्मा
२	चित्त (मन)
३	सुख, विज्ञान
४	आत्मा
५	वाणी, वाक्शक्ति
६	भोग (विलास, ऐश्वर्य)
७	चित, (मन)
८	दुःख
९	पराक्रम

स्पष्टतः जिसका समग्र अंक ५ होगा, वह भाषण देने में चतुर, प्रौढ़ एवं तर्कशक्ति में प्रबल होगा।

नीचे अंक और उनसे संबंधित धातु एवं रत्नों का परिचय दिया जा रहा है—

अंक	धातु	रत्न
१	स्वर्ण	माणिक्य
२	चाँदी	मोती
३	चाँदी	पुखराज
४	स्वर्ण	माणिक्य
५	स्वर्ण	पन्ना
६	स्वर्ण	हीरा
७	चाँदी	मोती
८	लोहा	नीलम
९	पंचधातु	मूँगा

अब यह जानना है कि किस व्यक्ति को कौन-सा रत्न धारण करना चाहिए। सर्वप्रथम उसे अपनी जन्म-तारीख पूरी लिखनी चाहिए।

उदाहरणार्थ किसी की जन्म-तारीख ८-९-१९६९ है, अब इन सभी अंकों को जोड़ लें—

८+९+१+९+६+९=४२
=४+२=६

अर्थात् जिसकी जन्म-तारीख ८-९-१९६९ है, उसका 'आत्मांक' ६ है, अतः उसे सोने की अंगूठी में हीरा जड़वाकर पहनना चाहिए, जो कि उसके लिए अत्यन्त शुभ, अनुकूल, उन्नतिदायक एवं श्रेष्ठ रहेगा।

अब आगे अंक एवं उनसे संबंधित दिशा स्पष्ट की जाती है।

"आत्मांक" (दिनांक जोड़ने पर प्राप्त एक अंक) की जो दिशा हो, उस दिशा में व्यापार-हेतु गमन करने या नौकरी के लिए जाने पर शीघ्र एवं श्रेष्ठ सफलता मिल सकेगी—

अंक	दिशा
१	पूर्व दिशा
२	वायव्य कोण
३	ईशान
४	पूर्व दिशा
५	उत्तर
६	अग्निकोण
७	वायव्यकोण
८	पश्चिम
९	दक्षिण

इतनी जानकारी होने के बाद अब यह जानकारी आवश्यक है कि किन-किन अंकों के कौन-कौन अंक मित्र हैं, कौन अंक सम हैं, तथा कौन अंक शत्रु।

अंक	अतिमित्र	मित्र	सम	शत्रु	अतिशत्रु
१	२,७	५	३,६,४	२	८
२	५	६,३,८	१,४	७,९	×
३	२,७,९	८	१,४	×	६,५
४	२,७	५	३,६	१,६	८
५	१,४	३	२,७,६	६,९	×
६	×	३	२,७,१,४,५,८	९	×
७	५	६,३,८	१,४	२,९	×
८	×	३	२,७,६,५,६	×	१,४
९	९	८	१,४,२,७,३	६	५

उपर्युक्त तालिका को अत्यन्त ध्यान से समझने की आवश्यकता है। उदाहरणार्थ एक व्यक्ति का जन्म १५-७-१९४२ को हुआ है, तो उसका आत्मांक ज्ञात किया—

१+५+७+१+९+४+२=२९
२+९=११=१+१=२

अर्थात् इस व्यक्ति का आत्मांक २ है, अत: वे सभी व्यक्ति जिनका आत्मांक ५ है, इसके घनिष्ठ मित्र होंगे। ३, ६, ८ आत्मांकवाले भी मित्र होंगे। १ तथा ४ आत्मांकवाले न मित्र होंगे न शत्रु। ७ और ९ आत्मांकवाले इसके शत्रु होंगे, तथा घोर शत्रु इसका कोई भी नहीं होगा।

नौकरी करते समय, साझेदार या पार्टनर बनाते समय, मित्रता करते समय, लेन-देन करते समय अथवा प्रेमी या प्रेमिका का चुनाव करते समय यदि इन तथ्यों का ध्यान रखा जाय, तो जातक न तो ठगा जायगा, और न ही धोखा खाएगा, इसलिये इसके अनुसार कार्य करने से वह शीघ्र ही निर्विघ्न सफलता के पथ पर अग्रसर हो सकता है।

अपने अधिकारी, सम्बन्धी या प्रेमी-प्रेमिका के स्वभाव का अध्ययन भी उनके आत्मांक से जाना जा सकेगा। अग्नितत्व-प्रधान व्यक्ति क्रोधी, तुनकमिजाज एवं जहीन होते हैं। जलतत्व-प्रधान व्यक्ति शान्त, स्थिरचित्त एवं सहृदय होते हैं। वायुतत्व-प्रधान व्यक्ति अस्थिरचित्त, क्षण-क्षण में बदलनेवाले, उतावले एवं चंचल होते हैं। पृथ्वीतत्व-प्रधान व्यक्ति सुस्त, धीरे-धीरे पर ठोस कार्य करनेवाले एवं गम्भीर होते हैं।

नीचे अंक एवं उनके तत्व स्पष्ट किये जा रहे हैं—

१	अग्नि तत्व
२	भूमि तत्व
३	जल तत्व
४	अग्नि तत्व
५	वायु तत्व
६	वायु तत्व
७	जल तत्व
८	पृथ्वी तत्व
९	अग्नि तत्व

अंकों के बारे में मुख्य-मुख्य बातें जान लेने के बाद यह जानना आवश्यक है कि प्रत्येक अंक किन-किन पदार्थों, भावनाओं एवं विचारों का प्रतिनिधित्व करता है एवं उस अंक में मूलरूप से क्या गुण हैं?

आगे प्रत्येक अंक एवं उनके प्रतिनिधित्व-प्रतीक स्पष्ट किये जा रहे हैं।

एक—अंकों में यह सर्वप्रथम अंक तथा सर्वश्रेष्ठ अंक कहलाता है, क्योंकि इसका प्रतिनिधि वह सूर्य है, जो देवश्रेष्ठ कहलाने के साथ-साथ सम्पूर्ण विश्व का भरण-पोषण करता है।

यह अंक नेतृत्वप्रधान है। नेता बनना, प्रत्येक कार्य में अगुआ बनना तथा अपने नेतृत्व की धाक जमाना इसका सहज गुण है। यह निश्चित है कि ऐसे व्यक्ति सफल प्रशासक सिद्ध होते हैं।

अहं की भावना इनमें प्रबल होती है; ये टूट सकते हैं पर झुकना पसंद नहीं करते। एक बार जो भी निश्चय ले लिया उसपर अटल रहते हैं। विघ्नों, बाधाओं एवं परेशानियों में भी विचलित न होकर ये आगे बढ़ते रहते हैं। यही इनकी सफलता का मूलमंत्र होता है। एकान्त इन्हें पसन्द है। अधिक मिलना-जुलना इनके बस की बात नहीं, अतः इनके गिने-चुने मित्र होते हैं।

स्वार्थी एवं खुदगर्ज भी इन्हें कहा जा सकता है। किसी भी कार्य को करने से पूर्व अपना स्वार्थ उसमें ढूंढ लेते हैं। आत्मविश्वास इनमें कूट-कूटकर भरा होता है।

दो—दो का अंक पूर्ण आत्मविश्वास का प्रतीक है। ये व्यक्ति पूर्णतः विश्वासपात्र कहे जा सकते हैं। यथासंभव ये अपने दिये गये वचनों की रक्षा करते हैं और प्राणप्रण से उन्हें निभाने की चेष्टा करते हैं।

ये व्यक्ति सहृदय, दयालु एवं धर्मभीरु होते हैं। सामाजिक उत्सवों, त्योहारों, एवं धार्मिक कार्यों में ये बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं।

ऐसे व्यक्ति निश्चय ही सहृदय, मितभाषी, मृदुभाषी एवं कोमल स्वभाव के होते हैं। कल्पना में खोये हुए ये अपने ही संसार में उलझे रहते हैं।

इनका मन अस्थिर एवं चंचल होता है। एक ही जगह एक ही कार्य को लम्बे समय तक करते रहना इनके वश की बात नहीं। इन्हें नित्य नये-नये विचार सूझते हैं, और उन्हें क्रियान्वित करने में ये लगे रहते हैं।

ये व्यक्ति मूलतः सौन्दर्यप्रिय एवं सौन्दर्यपारखी होते हैं। दूसरों को सम्मोहित करने की कला इनमें जन्मजात होती है। अपरिचित-से-अपरिचित व्यक्ति को भी अपना प्रिय बना लेना इनके बाएँ हाथ का खेल है।

पर सरलचित्त होने से लोग कई बार इन्हें ठग लेते हैं, फिर भी इनके चेहरे पर शिकन नहीं आती। यह जानते हुए भी कि सामनेवाला व्यक्ति चापलूसी कर उल्लू सीधा करना चाहता है, फिर भी ये चुप रहते हैं। इनके गृहस्थ जीवन में कुछ-न-कुछ बाधा बनी रहती है।

तीन—तीन का अंक साहस, शक्ति, वीरता, दृढ़ता एवं अविचलता का अंक है। श्रम इसके जीवन का आदर्श है, संघर्ष इसके पैरों की गति है, तथा कष्टसहिष्णुता का यह मूर्तिमन्त स्वरूप है। जितने ही अधिक कष्टों एवं संघर्षों से जूझता है, उतना ही उज्ज्वल से उज्ज्वलतर रूप में निखरता है।

निश्चय ही ये व्यक्ति रचनात्मक प्रवृत्ति के धनी होते हैं, पर इनकी रचनात्मकता में भी ध्वंसात्मकता छिपी रहती है। मित्रों के प्रति जितने ही अधिक ये सहृदय हैं, शत्रुओं एवं विरोधियों के प्रति उतने ही निर्मम, निष्ठुर। धुन के पक्के होते हैं

और एक बार जो मन में धार लिया उसे हर कीमत पर पूरा करके ही छोड़ेंगे।

अपनी आकांक्षाओं, भावनाओं एवं विचारों को जितने ये सुन्दर ढंग से व्यक्त कर सकते हैं, उस प्रकार से व्यक्त करना अन्य लोगों के लिए सहज नहीं। महत्त्वाकांक्षाएँ बढ़ी-चढ़ी रहेंगी; हर समय चित्त में एक छटपटाहट-सी बनी रहेगी कि किस प्रकार से उन्नति की जाय? किस प्रकार आगे बढ़ा जाय? यह आग जीते-जी बुझाना सम्भव नहीं।

अच्छे विचारक, दूरदर्शी, भावी को भाँपने की शक्ति, भौतिकवादी, एवं अपना कार्य सुन्दर ढंग से कर देने की इनमें जैसी क्षमता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। श्रम, शक्ति एवं शील के बल पर ये अन्त में अपना लक्ष्य प्राप्त करके ही छोड़ते हैं।

चार—चार के अंक से सम्बन्धित व्यक्तियों के जीवन में निरन्तर उतार-चढ़ाव बना रहता है। इनके जीवन में कोई भी कार्य—चाहे वह सामाजिक हो चाहे आर्थिक—बिना बाधा के सम्पन्न नहीं हो सकता। कार्यसम्पन्नता में एक बार तो बाधा आयेगी, फिर भले ही आगे चलकर वह कार्य सम्पन्न हो जाय।

ऐसा व्यक्ति सामाजिक गुणों से पूर्ण एवं मिलनसार होता है। धार्मिक कार्यों में यह बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता है, तथा खुद का व्यय करके भी कार्यसम्पन्नता में विश्वास रखता है।

इस अंक से प्रभावित व्यक्ति के भाग्योदय में भी निरन्तर उतार-चढ़ाव दिखाई देते हैं। निरन्तर उन्नति ही करता जाय, यह कम होता है। निरन्तर परिवर्तन, निरन्तर उतार-चढ़ाव, निरन्तर संघर्ष इनके जीवन की उपलब्धियाँ बन जाती हैं। स्वभाव इनका अस्थिर रहेगा; इनके स्वभाव के बारे में एक राय कायम करना अत्यन्त कठिन होगा। कभी ये मोम-से मृदु नजर आयेंगे, तो कभी क्रोध में सूर्य से भी प्रचण्ड गरजते-तपते दिखाई देंगे। जब क्रोध आयेगा, तब सब-कुछ अकथ्य भी कह देंगे, पर

क्रोध उतरने पर अपने ही किये पर पश्चात्ताप करते भी नजर आवेंगे।

इनके जीवन में जो भी घटनाएँ घटित होती हैं, वे आकस्मिक होती हैं। योजनाबद्ध कार्य करना इनके स्वभाव में नहीं, और योजनाबद्ध कार्य होना इनके भाग्य में नहीं। आकस्मिक धन होगा, अचानक से लॉटरी खुल जायगी, अप्रत्याशित प्रसन्नता के समाचार सुनने को मिलेंगे, आदि-आदि।

ये व्यक्ति रहस्यमय ही होते हैं। बात को अन्तर्मन में छिपाकर रखना, उसे किसी से भी न कहना इनका स्वभाव है। इनके भावी कदम का अनुमान विरोधी तो क्या, घनिष्ठ मित्र अथवा पत्नी तक नहीं लगा सकती।

दूसरों से सलाह लेना, खूब विचार-विमर्श करना, और बाद में अपनी इच्छानुसार कर लेना इनके व्यक्तित्व की विशेषता कही जायगी।

पाँच—पाँच के अंक से प्रभावित व्यक्ति हिम्मती, साहसी एवं कर्मनिष्ठ होते हैं। चुनौतियाँ स्वीकार करना और उन्हें पूरा कर दिखाना इनके व्यक्तित्व की विशेषता कही जायगी।

इनके जीवन का सबसे बड़ा गुण है दूसरों को सम्मोहित करने की कला। कितना ही विरोधी हो, बातचीत के माध्यम से उसे अपना बना लेना इनके बायें हाथ का खेल है। मित्र बनाना और उससे काम निकाल लेना, इसी गुण से ये कहीं पर भी अकेलापन महसूस नहीं करते।

यात्राएँ इनके जीवन का अंग हैं, और यात्राओं से इन्हें लाभ ही रहेगा। नये सम्पर्क बनेंगे तो नई-नई संभावनाएँ उजागर होंगी। ऐसे व्यक्ति सफल सेल्समैन बन सकते हैं।

तुरन्त और सही निर्णय ले लेना इनके व्यक्तित्व की एक और विशेषता है। किसी भी अपरिचित को देखते ही ये भाँप जाते हैं कि यह क्यों आया है? मुझसे क्या चाहता है? और

मुझे इसका क्या उत्तर देना है? यह सब एक क्षण में मन में स्थिर कर लेते हैं। यही रहस्य इनकी सफलता का मूलमंत्र है।

स्थिति-स्वाकरण इनकी एक और विशेषता है। जैसा भी अवसर हो, तदनुरूप अपने-आपको बना लेना तथा ढाल लेना इनकी विशेषता ही कही जायगी, जिसके कारण ये विरोधियों में भी अपना भली प्रकार निर्वाह कर सकते हैं।

इन्हें चाहिये कि जब भी इन्हें सुविधा और संभावना हो, व्यापारिक क्षेत्र में प्रविष्ट हो जायें जिससे ये अपने गुणों का पूरा-पूरा उपयोग करते हुए जीवनोन्नति कर सकें।

छः—छः के अंक से प्रभावित व्यक्ति सौन्दर्यप्रिय, कलापारखी, सरल, सौम्य, मित्रों को अपनी ओर आकर्षित करने में निपुण, रति में चतुर एवं कलाकार होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की सौन्दर्य वृत्ति सर्वाधिक जागरूक रहती है। ज्यादा-से-ज्यादा सुन्दर दिखाई देना, बन-ठनकर रहना, अपने रहने के स्थान को स्वच्छ, सुरम्य, शालीन बनाये रखना इसी छः के अंक का प्रभाव है। फूहड़ता या अव्यवस्था न तो इन्हें सह्य है और न ऐसे वातावरण में ये भली प्रकार से कार्य ही कर सकते हैं। पूर्ण भौतिकवादी, संसार का तथा सांसारिक सुखों का पूर्ण उपभोग करना इनका स्वभाव बन जाता है, क्योंकि इनका प्रतिनिधि ग्रह शुक्र है, जो सर्वाधिक ऐश्वर्यवान, ज्योतिष्मान एवं वीर्यवान है।

यद्यपि इनके जीवन में धन का अभाव ही रहता है, फिर भी हृदय से ये संकुचित नहीं रहते। मुक्तहस्त से व्यय करते रहना इनका स्वभाव बन जाता है। ये कोई-न-कोई ऐसी 'हॉबी' पाल लेते हैं, जो व्ययसाध्य होती है, जिसके कारण इनका बजट सामान्यतः असन्तुलित बना रहता है।

ऐसे व्यक्ति चतुर एवं नीतिज्ञ भी होते हैं। कोई भी कार्य करने से पूर्व उसपर खूब मनन करते हैं, उसका भला-बुरा सोच लेते हैं, तभी उस कार्य में हाथ डालते हैं। योजनाबद्ध रूप से

कार्य करने में ये पूर्ण विश्वास रखते हैं।

ऐसे व्यक्ति स्वस्थ, सबल, हँसमुख एवं बातचतुर होते हैं। समयानुसार ऐसी बात कहते हैं कि जो सटीक होती है।

दाम्पत्य जीवन इनका कटु नहीं कहें तो मधुर भी नहीं कहा जा सकता। ऊपर से इन पति-पत्नी के बीच भले ही प्यार का अभाव नजर न आवे, पर वास्तव में विपरीत-रति या प्रेम-प्रसंगों के कारण एक-दूसरे के मन में सन्देह बना रहता है एवं वह धीरे-धीरे दाम्पत्य जीवनसुख में घुन की तरह लगकर खोखला बनाता रहता है।

दूसरों को प्रभावित करने की इनमें अद्भुत क्षमता होती है। ईर्ष्या रहते हुए भी अन्य गुणों के कारण ये लोकप्रिय बने रहते हैं।

७. **सात**—सात के अंक से प्रभावित व्यक्ति अपनी अलग-अलग विशेषता के कारण अपने ही गुणों के फलस्वरूप पहचाने जाते हैं। इनमें मुख्यतः तीन गुण हैं—

१. **मौलिकता**—कोई भी, कैसा भी कार्य हो, पुराने ढर्रे से काम करने में विश्वास नहीं रखते, अपितु उसमें कोई-न-कोई ऐसी मौलिकता ला देंगे, जिससे वह वस्तु या कार्य अपनी अलग विशेषता से ही पहचाना जायेगा। बेकार और व्यर्थ की वस्तुओं में से भी सारसंग्रह कर लेना इनकी विशेषता ही कही जायगी।

२. इनका दूसरा गुण है **स्वतंत्र विचार-शक्ति**। स्वतंत्र और निर्भीक भाव से साफ-साफ कह देना इनके व्यक्तित्व और आत्मविश्वास की प्रबलता ही कही जायगी, जिसके कारण इन-पर सहज ही आस्था एवं विश्वास-सा जमने लगता है।

३. तीसरी विशेषता है **विशाल व्यक्तित्व**। न तो ये छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देते हैं, और न क्षुद्र बातों पर तकरार करते हैं। ऊँचे विचार, स्वस्थ चिंतन, निर्भीक वाणी और

विशाल व्यक्तित्व, यही कुछ दुर्लभ गुण इनमें विद्यमान हैं, जिसके कारण ये जीवन में सफलतापूर्वक ऊँचे उठकर कुछ करके दिखा सकते हैं।

ऊपर से ये चाहे कितने ही कठोर दिखें, पर अन्दर से ये मृदु, कोमल, नवनीतवत् होंगे। समाज में इनका स्थान प्रतिष्ठित होगा तथा जीवनीशक्ति और अद्भुत प्रतिभा के बल पर ये अपने नाम को अक्षुण्ण रख सकने में समर्थ होते हैं।

वस्तुतः सात का अंक जीवनोन्नति का आधार अंक है।

आठ—आठ के अंक पर शनि का पूर्ण प्रभुत्व है, जो कि 'शनैः चर' होने के कारण धीरे-धीरे चलता है। निश्चय ही ऐसे व्यक्तियों की उन्नति धीरे-धीरे ही होती है। इनके प्रत्येक कार्य में विलम्ब होना या व्यवधान पड़ना निश्चय ही समझना चाहिए।

इनकी वृत्ति अन्तर्मुखी ही होती है। बिना शोर किये, प्रचार-प्रसार से दूर, एकनिष्ठ, अपने कार्य में ये लगे रहते हैं। लोगों को तभी ज्ञात होता है, जबकि ये कार्य सम्पन्न कर लेते हैं। परन्तु इनका जो भी कार्य होगा, वह ठोस होगा, पूर्णता लिये हुए होगा, आश्चर्याभिभूत कर देनेवाला होगा।

इनका स्वभाव शान्त, गंभीर एवं निश्छल रहता है। ज़रा-ज़रा-सी बात पर ये उछलते नहीं। मामूली आलोचना से ये बिदकते नहीं, छिछोरपन से दूर रहते हैं तथा अपने कार्य के प्रति गंभीर एवं प्रामाणिक बने रहते हैं। ये जो कुछ भी होते हैं, उसके पीछे दृढ़ता, विश्वसनीयता एवं प्रामाणिकता समझनी चाहिये।

पर इतना होते हुए भी ये सामाजिक जीवन से अलग-अलग बने रहते हैं। इनके मित्र अत्यन्त कम होंगे। प्रतिशोध की भावना इनमें बड़ी प्रचण्ड रहती है और जिससे वैर बाँध लेते हैं उसे नेस्तनाबूद करने में ही विश्वास रखते हैं।

बीच की स्थिति में वे नहीं टिकते। आठ अंक से प्रभावित व्यक्ति या तो धनी होंगे, या फिर दीन-गरीब ही। या तो कीर्ति के सर्वोच्च शिखर पर होंगे, या फिर अत्यन्त सामान्य जीवनयापन करेंगे। हाँ, इतनी ऊँच-नीच होते हुए भी ये शान्त, स्थिर एवं जागरूक बने रहते हैं, यही इनके व्यक्तित्व की विशेषता कही जा सकती है।

नौ—नौ के अंक पर मंगल ग्रह का आधिपत्य रहता है, जो कि ज्वाज्वल्यमान, प्रकाशवान एवं चमकीला होने के साथ पृथ्वी पर गहरा प्रभाव डालने में समर्थ है। ऐसा व्यक्ति इज्जत, मान-मर्यादा पर मर मिटनेवाला, धुन का पक्का, स्वभाव का क्रोधी एवं अपना अलग ही व्यक्तित्व लिये हुए होता है। हारकर, पराजित होकर या सीना टेककर चुप रह जानेवाला वह जीव नहीं, अपितु अपना सब-कुछ होम करके भी मूँछें ऊँची रखनेवाला व्यक्तित्व है। धीरे-धीरे सुलगती हुई, धुआँ देती हुई लकड़ी की तरह जीने में वह विश्वास नहीं रखता, पर एक क्षण के लिए ही सही, भभककर जलने में, विस्फोट करने में, एक-बारगी सबको प्रकाशित कर देने में विश्वास रखता है।

ऐसे व्यक्ति किसी के आश्रय में साँस लेने के हिमायती नहीं, अपितु अपने ही बल पर, अपने ही कार्यों से, अपनी ही प्रतिष्ठा से धाक जमाने में विश्वास रखते हैं। पर इनका इस प्रकार का साहस कभी-कभी दुस्साहस का रूप धारण कर लेता है, और यह दुस्साहस कई बार इन्हें क्षति भी पहुँचा देता है।

ये अतुल साहसी, दृढ़निश्चयी एवं वीर-स्वभावयुक्त होते हैं। दुनिया में जो भी विलक्षण कार्य होते हैं, वे इनके ही बल पर होते हैं। अद्‌भुत-अकल्पनीय मानदण्ड स्थापित करते रहना इनका स्वभाव होता है। ऊपर से वज्रवत् कठोर, प्रचण्ड एवं दुर्द्धर्ष होते हुए भी अन्दर से ये कोमल एवं मृदु होते हैं।

पर ये अपने अभिमान एवं श्रेष्ठता के चक्कर में काफी समय, शक्ति एवं द्रव्य का अहित भी कर डालते हैं। अभिमान-सिक दिखावे के चक्कर में ये तड़क-भड़क से रहते हैं, अतः आय की अपेक्षा हमेशा व्यय बढ़ा-चढ़ा रहता है।

फिर भी ऐसा व्यक्ति पूर्ण जागरूक, सतर्क, स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त रहता है। उन्नति की धुन हर क्षण इनके मस्तिष्क में रहती है। ये आगे बढ़ने में जी-जान से लगे रहते हैं और तभी विश्राम करते हैं जब ये मंजिल तक पहुँच जाते हैं।

अंक और नाम

जीवन में नाम का सर्वाधिक महत्व है। प्रत्येक व्यक्ति का एक विशेष नाम होता है, और वह उसी से पहचाना जाता है।

संसार में प्रत्येक व्यक्ति की यह न्यूनाधिक इच्छा रहती है कि उसका नाम सीमित परिवेश से हटकर व्यापक क्षेत्र में फैले, और इसके लिए वह हर संभव प्रयत्न करता है।

पाश्चात्य-अंकज्योतिष की यह विशेष देन है कि वह नाम को अंकों में बदल लेती है। कीरो या चीरियो (Cheiro) ने अपनी पुस्तक Book of Numbers में प्रत्येक अक्षर के अंक निर्धारित कर लिये हैं जो कि इस प्रकार है—

A	ए	१
B	बी	२
C	सी	३
D	डी	४
E	ई	५
F	एफ़	८
G	जी	३
H	एच	५
I	आई	१
J	जे	१
K	के	२
L	एल	३
M	एम	४
N	एन	५
O	ओ	७
P	पी	८
Q	क्यू	१
R	आर	२
S	एस	३
T	टी	४
U	यू	६
V	वी	६
W	डब्ल्यू	६
X	एक्स	५
Y	वाई	१
Z	ज़ेड	७

प्रत्येक अक्षर के अंक की जानकारी के बाद किसी नाम को अंकों में बदलना अत्यन्त सुगम हो गया। मान लो इन्दिरा गांधी के नाम को अंकों में बदलना है तो इन्दिरा गांधी के नाम के लिखे होंगे—

I	आई	१	G	जी	३
N	एन	५	A	ए	१
D	डी	४	N	एन	५
I	आई	१	D	डी	४
R	आर	२	H	एच	५
A	ए	१	I	आई	१

योग करने पर संख्या ३३ हुई अतः इन्दिरा गांधी की नामांक-संख्या ३३ हुई।

इसी प्रकार शहर के नामांक को भी जान सकते हैं। नई दिल्ली के नामांक को जानना चाहें तो—

N	एन	५
E	ई	५
W	डब्लू	६
D	डी	४
E	ई	५
L	एल	३
H	एच	५
I	आई	१

कुल योग ३४ हुआ, अतः नई दिल्ली की नामांक-संख्या ३४ होगी।

प्रयोजन—अब प्रश्न उठता है कि नाम को अंकों में बदल देने से क्या फायदा है? इस प्रकार अंकों में परिवर्तित कर देने से क्या प्रयोजन है? मेरे विचार में इससे निम्न महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त होती हैं—

१. क्या मेरा नाम शुभ है, या अशुभ?
२. क्या मेरे नामांक को शुभ संख्या या शुभ नामांक में बदला जा सकता है?
३. क्या मेरा नामांक मेरी जन्मतिथि के अनुरूप है?
४. क्या वह शहर जहाँ मैं रह रहा हूँ, मेरे नामांक के लिए फायदेमंद है?
५. क्या मेरी पत्नी (या पति) का नामांक मेरे नामांक से मेल खाता है?
६. क्या अमुक नाम का भागीदार या रिश्तेदार मेरे अनुरूप रहेगा?
७. फर्म या कारखाना या उद्योग का क्या नाम रखा

जाय, जो मेरे नामांक के अनुकूल हो और मेरा हित कर सके?
८. पुत्र या कन्या का क्या नाम रखा जाय, जो हितकर हो?
९. नामांक के अनुसार कौन-सी तारीख मेरे लिए पूर्णतः अनुकूल रहेगी?

ये और ऐसे कई प्रश्न हैं जो हमारे मानस में उभरते हैं, और इनका पूर्ण समाधान भी मात्र अंकज्योतिष ही कर सकता है।

ऊपर दिये गए प्रश्नों के उत्तरों को बाद में टटोलेंगे, पहले पाश्चात्य ज्योतिर्विदों के अनुसार नामांक की किस संख्या का क्या महत्त्व है, इसे स्पष्ट कर लें।

१ से ९ तक के अंकों का महत्त्व पीछे बताया जा चुका है, इनके आगे के नामांक का महत्त्व व प्रभाव इस प्रकार समझें—

१०. यह अंक दृढ़ इच्छाशक्ति, प्रबल आत्मविश्वास एवं सहिष्णुता तथा धैर्य का मूर्तिमन्त रूप है। यह व्यक्ति जो भी मन में निश्चय कर लेता है, उसे पूरा करता ही है, बीच में हताश या निराश होकर नहीं रुकता।

ऐसा व्यक्ति साधारण स्थिति में जन्म लेकर भी काफी उठता है।

११. यह अंक विश्वासपात्र नहीं, क्योंकि ऐसे व्यक्ति का चित्त अस्थिर रहता है, तथा इसी अस्थिरता एवं ऊहापोह में वह धोखा भी दे देता है, दगा भी कर जाता है। ऐसे व्यक्ति अनिश्चयात्मक स्थिति के होते हैं और कब क्या कर बैठेंगे, इसका कोई भरोसा नहीं होता।

१२. यह अंक बलिदानी अंक है, क्योंकि लोभी अथवा स्वार्थ

साधन के रूप में इनसे हर प्रकार का सहयोग लेते हैं। ऐसे व्यक्ति निरन्तर मानसिक तनाव, मानसिक चिन्ता एवं कष्ट में रहते हैं।

१३. ये वे व्यक्ति हैं, जो निरन्तर अपने विचारों में परिवर्तन करते रहते हैं। प्रत्येक कार्य वे बड़े ही जोश-खरोश से शुरू करते हैं, पर जितने जोश-खरोश से ये काम शुरू करते हैं, उतनी ही जल्दी इनका उत्साह ठंडा भी पड़ जाता है।

यह संख्या तीव्रता, प्रचण्डता एवं वेग की है जिसे उचित मार्ग मिलना चाहिए, अन्यथा इनकी शक्ति विध्वंसकारी बन जाती है।

१४. यह मनुष्य भाग्यशाली होता है, तथा जुए में, सट्टे में या लॉटरी से इसे अच्छा द्रव्य मिल जाता है। पर यह अत्यधिक भावुक होता है जिससे दूसरे व्यक्ति इसकी गफलत से या इसके भोलेपन से लाभ उठा लेते हैं।

ऐसा व्यक्ति एकान्तप्रिय न होकर पूर्ण सामाजिक होता है। समाज के प्रत्येक कार्य में वह बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता है।

एक प्रकार से यह अंक गति का द्योतक है।

१५. निश्चय ही ऐसे व्यक्ति कलाप्रिय एवं संगीतप्रेमी होते हैं, तथा अपना अधिकांश समय श्रम एवं द्रव्यकला के लिए ही लगा देते हैं।

एक प्रकार से यह अंक 'रहस्य' का अंक है। यह व्यक्ति किस समय क्या कर बैठेगा, इसका पूर्वेक्षण तक आभास नहीं होता।

इनके प्रत्येक कार्य चक्कर में डालनेवाले, आश्चर्यचकित कर देनेवाले तथा विस्फोटक होते हैं।

यह अंक भाग्यवान्, साहसी एवं रहस्यात्मकता से ओत-प्रोत रहता है।

१६. इन व्यक्तियों का जीवन अनिश्चित-सा ही रहता है।

जितनी तीव्रता से ये ऊँचे उठते हैं, उतनी ही तीव्रता से ये पुनः पतन के गड्ढे में भी गिरते हैं, और इस गर्त में गिरने का कारण भी इनकी वासनाएँ ही होती हैं। जीवन में आकस्मिकताएँ अधिक होती हैं तथा निरन्तर एक के बाद एक दुर्घटनाओं का सामना करते रहना पड़ता है। सही अर्थों में ऐसे व्यक्ति मानसिक तनावों से मुक्ति नहीं पा सकते।

ये महत्त्वाकांक्षी होते हैं, पर महत्त्वाकांक्षा महत्त्वाकांक्षा ही रह जाती है; सम्पन्न होने से पहले ही उसकी हत्या हो जाती है।

१७. निश्चय ही यह अंक अजेय, संघर्ष एवं सफलता का द्योतक है। चाहे कितनी ही बाधाएँ आवें, चाहे कितनी ही परिस्थितियाँ उत्पन्न हों, पर ऐसे व्यक्ति न तो विचलित होते हैं और न ही अपने लक्ष्य से च्युत होते हैं। बाधाएँ और कठिनाइयाँ उल्टा इनमें विशेष जोश भरती हैं।

ऐसे व्यक्ति सहिष्णु, उदार, धैर्यवान् तथा क्षमाशील होते हैं। अपने कार्यों से यश प्राप्त करते हैं, तथा अपने ही प्रयत्नों से कीर्ति को अक्षुण्ण रख सकने में समर्थ होते हैं।

१८. विरोध, विपरीतता एवं वैमनस्य का प्रतीक यह अंक पारस्परिक शत्रुता का ही द्योतक है। इस प्रकार का व्यक्ति एक तरफ जहाँ कौटुम्बिक कलह से पीड़ित रहता है, वहाँ दूसरी ओर वह पति-पत्नी के बीच भी कलह भोगता है।

जहाँ तक मेरा अनुभव है, इस प्रकार का व्यक्ति अर्थाभाव से पीड़ित एवं मानसिक चिन्ताओं से ग्रस्त रहता है।

१९. यह अंक व्यक्ति की उच्चाकांक्षाओं, श्रेष्ठता एवं दिव्यता का द्योतक है। ऐसा व्यक्ति साधारण कुल में भी जन्म लेकर उन्नति की तरफ अग्रसर होता रहता है।

सीमित परिवेश से निकलकर ऐसे व्यक्ति निश्चय ही अतुल ख्याति, यश एवं प्रशंसा प्राप्त करते हैं।

२०. बीस के अंक को अंक-विशेषज्ञों ने न्याय का प्रतीक माना है। अनीति उसे सहन नहीं। पक्षपात से परे ऐसा व्यक्ति अपनी न्याय की तुला पर ही सबको तोलता है, और उसी के आधार पर अपने संबंधों को मोड़ देता है।

इनके दिमाग में निरन्तर नई योजनाएँ पनपती रहती हैं—ऐसी योजनाएँ जो अभूतपूर्व हों, आश्चर्यजनक हों, ठोस उपलब्धि से पूरित हों। यह अंक शुभता का द्योतक है।

२१. सफलतापूर्वक यह अंक अत्यन्त ही अनुकूल माना गया है, क्योंकि यह अंक उन्नति का है, श्रेष्ठता का है, दिव्यता एवं भव्यता का है, अपने आन-मान और सम्मान का है।

ऐसे व्यक्ति चाहे किसी भी क्षेत्र में हों, सफलता को अपनी चेरी बना ही लेते हैं। सामाजिक क्षेत्र में इनकी प्रतिष्ठा होती है, तथा अपने कार्यों से कुल का नाम उजागर करते हैं।

२२. यह अंक भावुकता एवं विश्वास का है। सरलहृदय इतना कि हर किसी का विश्वास कर ले, भावुक इतना कि किसी को भी ज़रा-सा दुखी या परेशान देखकर उसके लिए सब-कुछ करने को उद्यत हो जाता है, और विश्वासी इतना कि शत्रु भी पुचकारकर या हँसकर दो मीठे शब्द बोल दे तो यह बिना मोल बिकने को तैयार हो जाता है।

इसीलिए ऐसे व्यक्तियों को 'स्वप्नदर्शी' कहा गया है।

२३. यह अंक पराश्रय का है। पराश्रय इस रूप में कि यह स्वयं कुछ नहीं करता, या इसे रास्ता नहीं सूझता, पर यदि किसी अधिकारी या श्रेष्ठ व्यक्ति का इसे मार्गदर्शन मिल जाय, तो यह अत्यन्त तीव्र वेग से उन्नति की ओर अग्रसर हो जाता है।

परिश्रमी तो होता ही है, पर यह जितना परिश्रम करता है, उससे चौथाई ही लाभ उठा पाता है।

२४. यह लाभांक कहा गया है, अर्थात् ऐसा व्यक्ति सहिष्णु

तो होता ही है पर अत्यन्त सावधान एवं सतर्क भी। प्रत्येक कार्य चाहे वह छोटे-से-छोटा हो, या बड़े-से-बड़ा, अपना स्वार्थ पहले देखता है। किसी भी कार्य को करने से पूर्व यह भली प्रकार जाँच लेता है कि इसमें मुझे कितना लाभ रहेगा। इसीलिये कहा जाता है कि चौबीस नामांकवाले व्यक्ति बालू में से भी तेल निकालकर लाभ उठा लेते हैं।

विपरीत योनि के प्रति लालसा एवं तृष्णा इनकी बढ़ी-चढ़ी रहती है।

२५. इस नामांकवाले व्यक्ति के जीवन में मिश्रित फल होता है। इसे सफलता तो मिलती है, पर इससे पूर्व उसे काफी कठिनाइयाँ एवं बाधाएँ देखनी पड़ती हैं, और काफी परेशानियों के बाद सफलता के दर्शन होते हैं।

मगर यह व्यक्ति उर्वर मस्तिष्क का तथा परिश्रमी होगा, एवं कोई भी कार्य, नई खोज, नये विचारों को ग्रहण करने में झिचकिचाहट नहीं होगी। इनकी सफलता का यही मूल मंत्र है।

२६. यद्यपि यह व्यक्ति सतर्क तथा चौकन्ना रहता है और इसकी तेज निगाहें प्रत्येक कार्य के अन्दर तक पैठने की क्षमता रखती हैं, पर फिर भी यह उन मित्रों से धोखा खाता है जिन-पर यह ज़रूरत से ज्यादा भरोसा रखता है, उन रिश्तेदारों से जिन्हें वह अपना समझता है और उन परिचितों से जिनका यह काम निकालता है।

एक प्रकार से कहा जाय तो यह विश्वास में मारा जाता है। अतः इसे चाहिए कि यह भागीदारी नहीं करे, साझे व्यापार से दूर रहे, लेन-देन में सतर्कता बरते, तथा दूसरों की सलाह को परखकर फिर उसे अमल में ले।

२७. ऐसे व्यक्ति पूर्णतः बुद्धिजीवी होते हैं, और अपनी बुद्धि के बल पर ये उच्च पद प्राप्त कर ही लेते हैं, क्योंकि इनकी विचारशक्ति पूर्णतः मौलिक एवं नवीनता लिये हुए होती है।

अतः ये जो भी कार्य करते हैं, वह पुरातन होते हुए भी उसमें कुछ ऐसी नवीनता आ जाती है, जो सबसे अलग-थलग दिखाई देने लगती है।

इन व्यक्तियों को चाहिए कि ये दूसरों के विचारों को अमल में न लेकर यदि स्वयं के विचारों को ही क्रियान्वित करें, तो ज्यादा लाभ में रहें।

२८. यह संख्या द्वन्द्वात्मक है, अर्थात् इस संख्या में जितना शुभत्व है, उतना ही अशुभत्व भी, इसलिये ऐसे व्यक्ति घोर परिश्रम करते हैं और फिर भी यदि संयम तथा सतर्कता न बरतें, तो किया-कराया सब चौपट हो जाता है। इसलिये कार्यारम्भ से लगाकर कार्यान्त तक सतर्कता बरतनी तो बहुत ही आवश्यक है।

व्यापार में भी इन्हें चाहिए कि ये कार्य के दिखावे में न पड़ें। झूठी शान के मोह में पड़कर मुकद्दमेबाजी से दूर रहें, तथा व्यापार के छोटे-से-छोटे कार्य में भी सावधानी एवं सतर्कता बरतें तो निश्चय ही लाभ उठा सकते हैं।

२९. यह अंक अनिश्चय का सूचक है। कोई भी विचार या कार्य प्रारंभ से ही निश्चय-अनिश्चय का झूला झूलता रहता है। यह कार्य करें या नहीं, बस यही उमड़-घुमड़ बनी रहती है और किसी एक निर्णय पर सहज ही नहीं पहुँचा जा सकता। इसीलिए स्पष्ट दिशादृष्टि न होने से उन्नति के शिखर पर पहुँचने में वह असमर्थ-सा ही रहता है।

३०. यह प्रतिभा का अंक है। ये व्यक्ति बुद्धि या प्रतिभा के क्षेत्र में विशिष्टता के प्रतीक होते हैं। इन्हें अपनी बुद्धि पर भरोसा रहता है, तथा सही सूझ-बूझ के कारण ये शीघ्र ही सफलता पा लेते हैं।

यदि अर्थ-संचय एवं विद्या-संचय इन दो में से एक मार्ग चुनने के लिए कहा जाय, तो निश्चय ही ये धन की अपेक्षा विद्या को

ज्यादा महत्व देंगे।

आर्थिक दृष्टि से ये सामान्य कोटि के ही कहे जा सकते हैं

३१. इकतीस का अंक पूर्णतः अन्तर्मुखी प्रवृत्ति का द्योतक है। यह सामूहिकता से घबराता है, भीड़ से अलग रहने की कोशिश करता है। यह स्वभाव से ही भीरु एवं एकाकी होता है, तथा एकान्त चिन्तन में ही ज्यादा भरोसा रखता है।

सामाजिक दृष्टि से देखा जाय तो ये व्यक्ति असफल कहे जा सकते हैं, पर किसी एक विशिष्ट क्षेत्र में ये इतनी उन्नति कर लेते हैं कि इनकी यह असफलता ढक जाती है। इस दृष्टि से इस संख्या को न शुभ कहा जा सकता है और न अशुभ।

३२. ऐसे व्यक्ति बुद्धि की दृष्टि से श्रेष्ठ कहे जा सकते हैं, पर ये आलसी होते हैं, तथा स्वतंत्र चिन्तन में कम शक्ति लगाते हैं, फलस्वरूप एक प्रकार से ये वे ही कार्य करते हैं, उसी प्रकार कार्य करते हैं जिस प्रकार से दूसरे करते या कहते हैं और इसीलिए ये जीवन-क्षेत्र में असफल-से रहते हैं।

यदि ये व्यक्ति स्वतन्त्र चिन्तन करें और जो स्वयं सोचते हैं उसी के अनुसार कार्य करें तो निश्चय ही सफल हो सकते हैं।

३३. यह अंक प्रबल आत्मविश्वास का प्रतीक है। जो सोच लिया, उसे पूरा करना ही है, फिर भले ही मार्ग में कितनी ही कठिन चट्टानें क्यों न हों। अन्तहीन धैर्य, अटूट जिद तथा प्रबल जीवन शक्ति के बल पर ये व्यक्ति ऊँचे उठते हैं, तथा अपने स्वयं के कार्यों से अपने-आपको कीर्तिवान तथा देदीप्य बनाते हैं।

३४. प्रारंभ में कठिनाइयाँ अधिक होने से एक प्रकार का संकोच, एक प्रकार की झिझक इनके मन में घर कर जाती है और यह एक कुंठा-सी बन जाती है। एक प्रकार से आत्महीनता का भाव इनके मन में घर कर जाता है और यही आत्महीनता, यही कुंठा इन्हें आगे बढ़ने से रोक देती है। फलस्वरूप ये जीवन में चाहते हुए भी सफलता नहीं पा सकते।

३५. ये पग-पग पर दूसरों का आश्रय चाहते हैं। ये चाहते हैं कि हम कुछ भी न करें, पर काम रुके भी नहीं। इनके लिए ये सीधे-उलटे प्रयत्न भी करते रहते हैं, पर इसमें सफलता नहीं मिल पाती और दूसरों के भरोसे काम छोड़ देने पर नुकसान ही होता है। सफलता में न्यूनता रहना इसी कारण का होना है।

३६. ऐसे प्रबल आत्माभिमानी व्यक्ति जबान के खरे और जो मन में सोच लेते हैं उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं। ऐसे व्यक्ति उच्च पद पर सुशोभित होते हैं, तथा इनके जिम्मे जो भी कार्य होता है उसे पूरी दक्षता तथा उत्तरदायित्व के साथ सम्पन्न करते हैं।

मस्तिष्क से ये सुलझे हुए तथा सही पथ को ग्रहण करने-वाले होते हैं।

३७. यह अंक सहयोग का है। इन व्यक्तियों का भाग्योदय तभी संभव है, जबकि ये किसी के सहयोग से या साझेदारी में कार्य करें। मस्तिष्क इनका उर्वर होता है, तथा इनकी योजनाएँ भविष्य के गर्भ में पूर्णतः सही उतरती है।

ऐसा प्रबल आत्मविश्वासी व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माण स्वयं पुरुषार्थ के द्वारा ही करता है।

३८. यह अंक अस्थिरता का सजीव रूप है। किसी एक विषय पर लम्बे समय तक सोचना इनके वश में नहीं। टिककर या जमकर काम करना इनके स्वभाव में नहीं। फलतः इन्हें चंचल एवं अस्थिर स्वभाव का कह सकते हैं। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि ये व्यक्ति एजेंट या अच्छे सेल्समैन सिद्ध हो सकते हैं।

३९. यह धीरता का अंक है, उर्वर मस्तिष्क एवं जीवन्तता का द्योतक है। चाहे कितनी ही कठिनाइयाँ आयें, चाहे कैसी बाधाएँ उपस्थित हो जायें, ये अपने मार्ग से नहीं हटते, लक्ष्य-च्युत नहीं होते। इनकी सफलता का यही राज है।

४०. अन्तर्मुखी-प्रधान यह व्यक्ति बाहर से पक्का नास्तिक होते हुए भी मूलतः धर्मभीरु एवं ईश्वर में श्रद्धा रखनेवाला होता है, पाप से डरता है, तथा उतना ही बोलता है जितना उसे बोलना चाहिए। इस प्रकार से यह बहिर्मुखी न होकर आत्मकेन्द्रित-सा अन्तर्मुखी व्यक्ति होता है।

सांसारिक सफलताओं से उदासीन यह व्यक्ति काफी ठोकरें खाने के बाद अपनी मंजिल पर पहुँच पाता है।

४१. ऐसा व्यक्ति साधारण कुल में भी जन्म लेकर ऊँचा उठता है, ऊँचा ही नहीं बल्कि वह सब-कुछ प्राप्त करता है जो कि इसकी आकांक्षा होती है। यही कारण है कि ऐसे व्यक्ति जीवन में सफलता के चरण चूम ही लेते हैं।

इनमें सारग्राहिणी प्रतिभा होती है, और इस प्रतिभा के बल पर ही ये सफलता प्राप्त करते हैं, तथा यश-कीर्ति-सम्मान के भागी हो जाते हैं।

४२. ऐसे व्यक्ति पराश्रयी कहे जा सकते हैं। यद्यपि इनमें प्रतिभा होती है, आगे बढ़ने की उत्कट चाह होती है, तथा कुछ कर गुजरने की हविस होती है, परन्तु तब तक ये व्यक्ति कुछ भी नहीं करते जब तक कि कोई इन्हें झकझोर न दे, इनकी सही-सही क्षमताओं से इन्हें परिचित न करा दे।

४३. यह बाधांक कहलाता है। चाहे कैसा भी कार्य हो, चाहे कुछ भी व्यवस्था हो उसमें बाधा तो आती ही है। एक ही बार में कार्य सम्पन्न हो जाय, इसकी सम्भावना कम ही रहती है।

हर बार असफलता, बार-बार अड़चनें एवं बाधाएँ, व्यर्थ का सिरदर्द, लड़ाई, दंगे, फ़साद, मुकद्दमे आदि का द्योतक यह अंक अशुभ ही कहा जा सकता है।

४४. दूसरों के सहयोग के बिना ये कार्य कर नहीं सकते और जब भी दूसरों का सहयोग लिया जाता है तो ये हानि में

ही रहते हैं। क्योंकि ये बार-बार धोखा खाते हैं, हानि उठाते हैं तथा अपने स्वयं के लिए कठिनाइयाँ उत्पन्न करते हैं, अतः इन्हें चाहिए कि ये परमुखापेक्षी होना छोड़ें, तथा अपनी ही योजनाओं को क्रियान्वित करें जिससे सफलता के पथ पर अग्रसर हो सकें।

४५. उच्च व्यक्तित्व से सम्पन्न ये जातक जीवन-क्षेत्र में सफल रहते हैं। इनके व्यवहार में एक प्रकार की लचक होती है, परिस्थितियों के अनुसार अपने-आपको ढालने की इनमें क्षमता होती है, और इसी वजह से ये शत्रुओं में भी निभ जाते हैं, तथा लोगों के प्रिय पात्र बने रहते हैं।

जीवन के यौवनकाल में ही ये सफलता के हाथों अपने गले में जयमाला डलवा लेते हैं।

४६. यह भाग्यसूचक अंक है। जीवन में कई घटनाएँ बिना कारण के ही घट जाती हैं और इन आकस्मिक कारणों या घटनाओं से ही इनके भाग्य का निर्माण होता है।

एक प्रकार से यह अंक विशिष्टता का ही द्योतक है। इनके प्रत्येक कार्य में एक भव्यता या दिव्यता के दर्शन होते हैं, जिसकी वजह से ये सफल भी होते हैं, और अक्षुण्ण कीर्ति के भी भागीदार हो जाते हैं।

४७. यह अंक 'अनिश्चित जीवन' का प्रतीक है। इनके जीवन में कब क्या घटित हो जाएगा, इसका कोई पूर्वाभास नहीं रहता। ये ठीक उस प्रकार के लकड़ी के टुकड़े हैं, जो किसी नाव से छिटककर बीच समुद्र में गिर गये हैं और लहरों के हिचकोलों के साथ इधर-उधर डूबते-उतराते हैं।

ऐसे व्यक्ति अत्यन्त साधारण एवं दरिद्र जीवन व्यतीत करते हुए भी देखे गये तथा श्रेष्ठतम स्थान पर कुशलता से कार्यसंचालन करते हुए भी।

४८. यह अंक मेधाशक्ति का परिचायक है। उर्वर कल्पना-

शक्ति, प्रबुद्ध चिन्तन-बुद्धि एवं सूझबूझ के बल पर ये समाज में अपना एक निश्चित स्थान बनाते हैं, तथा अपनी प्रतिभा से ही ये जीवन में ऊँचे उठते हैं।

पर ऐसे व्यक्ति साधारण एवं सामान्य जीवनस्तर के धरातल पर रहते हैं। सादगी इनका लक्ष्य होता है, पर यह सादगी ही इनकी मजबूरी होती है, क्योंकि ये अर्थसंचय की ओर कभी ध्यान ही नहीं देते, अपितु इस ओर से ये लापरवाह ही होते देखे गये हैं।

४९. यह व्यक्ति जीवन के संघर्षों एवं कशमकश से जल्दी ही हार जाता है और यह दुर्बलता इसे अन्तर्मुखी बना देती है। फलस्वरूप यह बहुत कम बोलता है, सभा-सोसाइटियों में बहुत कम जाता है और लोगों से उतना ही सम्पर्क रखता है जितना आवश्यक है। मित्रों की संख्या बहुत ही कम होती है।

५०. यह अंक उर्वर कल्पना का मानदंड है। ऐसे व्यक्ति सहिष्णु, भावुक एवं कल्पनाप्रिय व्यक्ति होते हैं। इनकी कल्पना का संसार अत्यन्त ही भव्य एवं रमणीय होता है जिसके बाहिर विचरण करना ये चाहते ही नहीं। जीवन की कठोर वास्तविकताओं से दूर ही रहते हैं।

इतना होने पर भी इनके जीवन में ठहराव नहीं होता, मानसिक अशान्ति से मुक्ति नहीं मिलती, जीवन की समस्याओं का हल नहीं प्राप्त होता। ये स्वप्नदर्शी होते हैं, और स्वप्नदर्शी ही बने रहना चाहते हैं।

५१. यह अंक विजय—पूर्णविजय—का द्योतक है। ऐसे व्यक्तियों के जीवन में संघर्ष के अवसर कम ही आते हैं, पर यह भी देखा गया है कि संघर्ष के क्षणों में इनका मस्तिष्क और भी अधिक सुचारु रूप से, और भी अधिक दक्षता से काम करने लग जाता है और ये उस संघर्ष में शत-प्रतिशत रूप से सफल ही होते हैं।

पर एक तरफ जहाँ संघर्ष की दृष्टि से यह नामांक शुभ है वहाँ दूसरी ओर यह भी निश्चित है कि इस व्यक्ति के कई शत्रु होंगे। फिर भी यह बिना चिन्ता किए अपने पथ पर अग्रसर रहता है।

५२. यह संख्या अशुभ है एवं हार तथा परेशानियों से पूर्ण है। ऐसे व्यक्ति के जीवन में पूर्ण सुख के चार क्षण भी नहीं कहे जा सकते। बार-बार की असफलताओं से उसकी हिम्मत जवाब दे देती है, तथा जिन्दगी के हाथों क्रूरता से निचोड़ा हुआ छूछा मानव रह जाता है, जो किसी भी प्रकार से जिन्दगी को बसर करना नियामत समझता है।

५३. यह नामांक 'रहस्य-प्रभाव' को अपने-आप में समेटे हुए होता है। कोई भी बात हो, कैसी भी बात हो, इनके पेट में पच सकती है, मन के अन्दर छिपी रह सकती है, और तब तक वह बात छिपी रहती है जब तक कि ये स्वयं उजागर करना न चाहें।

इनके व्यक्तित्व की एक और विशेषता है, वह यह कि इनके चेहरे से यह पता नहीं चलता कि इनके मन में क्या है? चेहरे को निर्विकार बनाए रखना अपने-आप में उच्च साधना है, और यह साधना इनकी बपौती है।

ये अच्छे गुप्तचर, रक्षा-संस्थानों के कर्मचारी आदि हो सकते हैं।

५४. यौवन का अंक निडरता का सूचक है। बोलने में होशियार, तर्क देने में दक्ष तथा अपने व्यक्तित्व, अपने विचारों एवं अपनी वक्तृत्व-शक्ति से विरोधियों को भी अपने पक्ष में कर लेने की अद्भुत क्षमता होती है। अकाट्य तर्कों के सामने विरोधी टिक नहीं सकता, एक ही विषय पर घंटों भाषण दे सकते हैं, तथा धाराप्रवाह से अपनी ख्याति एवं सम्मान की वृद्धि करते हैं।

५५. जीवन में पिछलग्गू रहना कोई मायने नहीं रखता,

इस दृष्टि से कहा जाय तो यह अंक पूर्णतः 'नेतृत्व' को व्यक्त करता है। बाल्यावस्था में विद्यालय में अगुआ, कॉलेज का हीरो तथा जीवन-संग्राम का योद्धा सिद्ध होने के साथ-साथ सदैव दूसरों का पथ-प्रदर्शन करता है। उन्हें अपने नेतृत्व में उन्नति की ओर ले जाने की क्षमता रखता है।

बुद्धि इनकी प्रखर होती है, तथा तुरन्त निर्णय लेने में ये होशियार होते हैं। समाज में जो भी शुभ परिवर्तन होते हैं, वे परिवर्तन ऐसे ही व्यक्तियों द्वारा सिद्ध होते हैं।

५६. यद्यपि ये व्यक्ति नेतृत्व के भूखे होते हैं तथा हर संभव इसी प्रयत्न में रहते हैं कि लोग इन्हें लीडर मानें, अपना अगुआ मानें, इनके निर्देशन में चलें, पर ऐसा संभव नहीं होता और इसके लिए जो अपेक्षित गुण होते हैं, उनकी न्यूनता इनमें पाई जाती है। फलस्वरूप इन्हें मंजिल तक पहुँचकर पीछे सरकना पड़ता है।

एक और कारण है, वह यह कि इनका लक्ष्य कई बार निकृष्ट कोटि का होता है। फलस्वरूप नेतृत्व में उतनी श्रद्धा नहीं रह पाती जितनी इन कार्यों में अपेक्षित होती है।

५७. खुशमिजाज, दूसरों से हँसकर बतियानेवाला, तथा अपना बना लेने का विशेष गुण अपने-आप में संजोए रखनेवाला व्यक्ति प्रत्येक कार्य या विश्वास या व्यापार-व्यवसाय में सफलता प्राप्त करता ही है।

"चरैवेति" इनका मूलमन्त्र होता है। प्रतिक्षण कुछ-न-कुछ करते रहना, हर समय क्रियाशील बने रहना ही वह गुण है जो इन्हें सफलता के पथ पर तीव्रता से अग्रसर करता है।

५८. बिलकुल खुला, उन्मुक्त और स्वच्छ-स्पष्ट व्यवहार इनके जीवन की विशेषता होती है। जो इनके मन में है, वही जाहिर है। न तो मन में कोई ग्रन्थि है, न दुविधा है, न घुमड़न है, न गलत विचार है। जो कुछ भी है, सबके सामने खुला है, इसी-

लिए एक ओर जहाँ इनके हितैषियों की संख्या भी काफ़ी होती है, वहाँ विरोधी भी कम नहीं होते। कुल मिलाकर इनका प्रभाव अच्छा ही पड़ता है।

ऐसे व्यक्ति सौम्य, सरल, निष्कपट एवं सहृदय होते हैं। दूसरों के प्रति इनका मधुर व्यवहार होता है। ये अच्छे चिकित्सक होते हैं।

५६. जीवन में जितने उतार-चढ़ाव इन्हें देखने पड़ते हैं, उतने कम लोगों के जीवन में होते हैं। येन-केन-प्रकारेण धन-संचय ही इनका लक्ष्य होता है, तथा धनसंग्रह के लिए ये किसी भी स्तर तक जाने में संकोच नहीं करते। झूठ, कपट, धोखा, सट्टा, बेईमानी सब जायज है, यह इनका साधन होता है; साध्य होता है धन-संग्रह, और इसमें वे सफल हो ही जाते हैं।

यात्राएँ कई होती हैं, तथा जलयात्रा, वायुयात्रा आदि सभी प्रकार की यात्राएँ ये निरन्तर करते रहते हैं।

६०. सदैव मुस्कराहट के फूल बिखेरते रहना, खुद भी खुश रहना और दूसरों को भी खुश रखना इनके जीवन की विशेषता कही जा सकती है। कठिन-से-कठिन क्षणों में भी इनके चेहरे पर मुस्कराहट की रेखा लुप्त नहीं होती। विपत्ति के समय भी ये हँसते रहते हैं और यह विशेषता विरले ही लोगों में पाई जाती है।

चिकित्सा, देशसेवा, समाज-सुधार, आदि कार्यों में ये व्यक्ति पूर्णतः सफल रहते हैं।

६१. आत्मसंयम, मन तथा विचारों पर पूर्ण नियंत्रण, तथा अल्पभाषी, ऐसा व्यक्ति जीवन के अन्तिम समय में सफल रहता है। यद्यपि प्रारम्भ में इन्हें घोर कष्ट उठाना पड़ता है, पर ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती है, ये अपने लक्ष्य के अधिकाधिक निकट पहुँचते रहते हैं, तथा अन्त में सफलता इनके चरणों में झुकी दिखाई देती है।

यात्रा करने का शौकीन, नए-नए लोगों से मिलने में तत्पर, शास्त्र-निष्णात यह व्यक्ति श्रेष्ठ पुरुषों की कोटि में गिना जाता है।

६२. सैनिक नेतृत्व में यह पूर्ण सफलता का मापांक है। यदि ऐसा व्यक्ति सेना में भाग ले, तो शीघ्र ही उन्नति कर अधिकारी-पद तक जा पहुँचता है।

कर्मठ, संयमी तथा सूझबूझ रखनेवाला यह जातक हिचकिचाता नहीं। इसकी गति तूफ़ान की गति होती है। अपने-आप पर इसे पूरा भरोसा होता है, और इसी वजह से यह सफलता के चरण चूमने में सक्षम हो जाता है।

६३. यदि इस अंक को 'परोपकारी अंक' की संज्ञा दे दें तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। दूसरों की भलाई करने में ही इसे आनन्द आता है, दूसरों का हित-सम्पादन ही इसका लक्ष्य होता है, दूसरों की उन्नति ही इसकी आकांक्षा होती है।

भलाई करते रहना, दूसरों की उन्नति से खुश होना या धार्मिक कार्यों में लगे रहना इनका स्वभाव होता है। समाज में इनका सम्मान होता है। पर ये अपव्ययी भी होते हैं, फलस्वरूप आर्थिक चिंता बराबर इन्हें सताती रहती है।

६४. भले ही ये व्यक्ति व्यापार व्यवसाय करें, पर यदि व्यापार-व्यवसाय की अपेक्षा ये नौकरी करें तो जीवन में ज्यादा सफल हो सकते हैं।

विवाहित जीवन इनका प्रायः असफल-सा ही रहता है और पति-पत्नी के बीच लगभग मतभेद बने रहते हैं, जिससे मानसिक परेशानी स्वाभाविक है।

६५. जीवन में कई बार चोटें लगती हैं, ऐक्सीडेंट होते ही रहते हैं। एक प्रकार से इनका जीवन खतरों से भरा रहता है।

शान्त जीवन इन्हें पसन्द भी नहीं। कुछ-न-कुछ करते रहना ही इनकी हॉबी होती है। यदि इनके जीवन में व्यस्तता या उथल-

पुथल न हो तो ऊब जाते हैं, क्योंकि गति इनका लक्ष्य होता है, संघर्ष इनका मूलमंत्र होता है।

६६. यह अंक पूर्ण सफलता का परिचायक है। चाहे यह व्यापार में हो, चाहे नौकरी में, चाहे व्यवसाय में हो या अन्य किसी नौकरी में, अपने उद्देश्य में सफल होकर ही रहते हैं।

जीवन में निरन्तर क्रियाशील बने रहना, उत्तरोत्तर उन्नति करते रहना तथा लक्ष्य के प्रति सतत जागरूक बने रहना, ये ही इनके विशिष्ट गुण कहे जा सकते हैं।

६७. दूसरों से इनका व्यवहार सौम्य, स्वभाव मृदु तथा सम्बन्ध मधुर होते हैं। मन में गाँठ नहीं होती, तथा जो दिल में होता है वही जीभ पर रखते हैं। इनकी स्पष्टवादिता ही इनका प्रधान गुण है जिसके फलस्वरूप इनकी उन्नति हो पाती है।

समाज-सुधार और चिकित्सा आदि के क्षेत्र इनके लिए विशेष सफलतासूचक हैं।

६८. ये व्यक्ति हर समय घबराए हुए तथा परेशान रहते हैं। इनके जीवन में, और जीवन से भी ज्यादा इनके मस्तिष्क में उथल-पुथल मची रहती है जिसके कारण ये परेशान, हतोत्साह तथा अधीर बने रहते हैं। छल-कपट-धोखा इनके नैसर्गिक गुण हैं।

६९. यह 'कीर्ति अंक' है। ऐसा व्यक्ति यशोभागी होता है, तथा अपने ही कार्यों से यह व्यक्ति कीर्ति-संग्रह करता है। काफी बड़े परिवेश और समुदाय में इनकी प्रशंसा रहती है, तथा ये सौभाग्ययुक्त, कीर्तिवान् तथा सम्मानपूर्ण जीवन-यापन करते हैं।

७०. यह 'सौभाग्य अंक' है। ये जिस क्षेत्र में जाते हैं, सफलता प्राप्त करते हैं, तथा यशोभागी भी होते हैं। नामांक ६९ की अपेक्षा ये कम सफल होते देखे गए हैं।

वृद्धावस्था इनकी मधुर रहती है, तथा सुखपूर्वक जीवन-यापन करते हैं।

७१. यह परेशानी का प्रतीक है। जीवन में कोई-न-कोई

किसी परेशानी लगी ही रहती है जो इन्हें चैन से नहीं बैठने देती। हर समय मस्तिष्क एक अज्ञात खतरे से आशंकित रहता है। इसी वजह से न तो खुलकर कार्य कर सकते हैं, और न खुलकर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

७२. परिश्रम का प्रतीक यह नामांकन व्यक्ति को कठिन संघर्षों के बाद सफलता प्रदान करता है। दस प्रतिशत परिश्रम करने पर इन्हें दो प्रतिशत सफलता मिलती है, और बाकी आठ प्रतिशत परिश्रम का लाभ अन्य ही उठा ले जाते हैं।

परिश्रम करते रहने पर भी इनके चेहरे पर निराशा के चिह्न नहीं होते, हतोत्साहित होने का भाव नहीं होता। इसके विपरीत सदा ताजगी, प्रफुल्लता, तथा मुस्कराहट इनके चेहरे पर खेलती रहती है।

७३. यह नामांकन साधारणता का प्रतीक है। सामान्य बने रहना इनका स्वभाव बन जाता है। प्रारंभ में अवश्य ये परिश्रम करते हैं, तथा ऊँचा उठने का प्रयत्न भी करते हैं, परन्तु विपरीततायें इतना अधिक इन्हें दबा लेती हैं कि ये हतोत्साह हो जाते हैं तथा यह मान लेते हैं कि मेरा जीवन साधारण है और साधारण ही रहेगा।

७४. श्रेष्ठता का यह प्रतीक जीवन में पूर्ण सफलता का द्योतक है। साधारण कुल में जन्म लेकर भी ये व्यक्ति ऊँचे उठते देखे गए हैं। परिश्रम करने से ये कतराते नहीं, हिम्मत ये हारते नहीं, विरोधी परिस्थितियाँ इन्हें डिगा नहीं सकतीं, झंझावात इनकी उन्नति की लौ को बुझा नहीं सकती, इसीलिए ये सफल होते हैं।

७५. पचहत्तर का नामांक भोग-प्रधान होता है। 'ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्' इनका मूल मंत्र है, तथा एक प्रकार से पूरे संसारी, भौतिकवादी, नास्तिक तथा मौज-शौक करनेवाले होते हैं। कल क्या होगा, इसकी ये परवाह नहीं करते। संचय करना

इनका स्वभाव नहीं। वृद्धावस्था इन लोगों की अत्यन्त कष्टप्रद होती है।

७६. यह अंक अभाव का सूचक है। कई बार ऐसा होता है कि व्यक्ति घोर परिश्रम करता है, विपरीत परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने का भरसक प्रयत्न करता है, फिर भी उसे सफलता नहीं मिल पाती और ऐन समय पर कुछ ऐसा चक्र चलता है कि सब किया-कराया गड़बड़ हो जाता है। ठीक ऐसी ही स्थितियों में ये लोग जीवित रहते हैं, तथा अभाव का श्राप भोगते रहते हैं।

७७. यह नामांक अलगाव का चिह्न है, क्योंकि इसमें स्वार्थ की भावना सर्वाधिक रूप में होती है। प्रत्येक कार्य में ये अपना हित अथवा अपना स्वार्थ पहले देखते हैं और धीरे-धीरे यह स्वार्थप्रवृत्ति इतनी अधिक बढ़ जाती है कि प्रत्येक कार्य में ये स्वार्थ ही देखते हैं। यह स्वार्थ घर के रिश्तेदारों, मित्रों तथा पत्नी के प्रति भी व्याप्त हो जाता है।

फलस्वरूप, इनकी आदतों के कारण मानसिक रूप से कोई इनका मित्र या हितैषी नहीं रहता।

७८. यह धन का प्रतीक है। अनायास धन प्राप्त होने के कई अवसर इनके जीवन में आते हैं। हर कार्य में ये पैसा प्राप्त कर लेते हैं। जिस व्यापार या व्यवसाय में दूसरे लोग सफल नहीं हो पाते, उसमें भी ये सफल हो जाते हैं।

व्यावसायिक बुद्धि इनमें कूट-कूटकर भरी होती है।

७९. यह परोपकारी अंक है। खुद का बिगाड़ करके भी दूसरों को सुधारना, खुद का अहित करके भी दूसरों का हित-सम्पादन करना इनका स्वभाव होता है, इसीलिए ये परोपकारी माना गया है। सार्वजनिक क्षेत्रों में ये अगुआ होते हैं, तथा समाज में वे सम्मानपूर्वक जीवनयापन करते हैं।

८०. पूर्ण सफलता का परिचायक यह नामांक व्यक्ति को

अत्यन्त उच्च धरातल पर प्रतिष्ठित करने में सहायक होता है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, चारों ही दृष्टियों से ये सफल कहे जा सकते हैं।

अब मैं उन प्रश्नों का हल स्पष्ट करता हूँ, जो इस अध्याय के प्रारम्भ में उठाए थे।

क्या मेरा नाम शुभ है या नहीं ?

किसी भी नाम की शुभता या अशुभता उसके नाम को अंकों में परिवर्तित कर देने से ज्ञात होती है।

पर यहां यह प्रश्न उठता है कि किस नाम को प्रधानता दी जाए ? उदाहरणार्थ गांधी जी के तीन नाम प्रचलित थे—(१) मोहनदास कर्मचन्द गांधी, (२) महात्मा गांधी, (३) गांधी जी।

इन तीनों में भी महात्मा गांधी का नाम सर्वविदित था, और इसी नाम से वे अधिकतर जाने भी जाते थे। अब हम इस नाम को अंकों में परिवर्तित करके देखें—

MAHATMA GANDHI (महात्मा गांधी)

M	एम	४
A	ए	१
H	एच	५
A	ए	१
T	टी	४
M	एम	४
A	ए	१
G	जी	३
A	ए	१
N	एन	५
D	डी	४
H	एच	५
I	आई	१

महात्मा का नामांकन=४+१+५+१+४+४+१=२०
गांधी शब्द का नामांकन=३+१+५+४+५+१=१९
महात्मा गांधी का नामांकन=२०+१९=३९

अब हम देखें कि २० अंक का क्या प्रभाव बताता है, १९ अंक का क्या प्रभाव है तथा फिर यह भी देखें कि ३९ के अंक का क्या प्रभाव है।

२० अंक—बीस के अंक को अंक-विशेषज्ञों ने न्याय का प्रतीक माना है। अनीति उसे सहन नहीं; पक्षपात से परे ऐसा व्यक्ति अपनी न्याय की तुला पर ही सबको तोलता है और उसी के आधार पर अपने सम्बन्धों को मोड़ देता है।

इनके दिमाग में निरन्तर नई योजनाएँ पनपती रहती हैं—ऐसी योजनाएँ जो अभूतपूर्व हों, आश्चर्यजनक हों, ठोस उपलब्धि से पूरित हों। यह अंक शुभता का द्योतक है।

१९ अंक—यह अंक व्यक्ति की उच्चाकांक्षाओं, श्रेष्ठता एवं दिव्यता का द्योतक है। ऐसा व्यक्ति साधारण कुल में भी जन्म लेकर उन्नति की तरफ अग्रसर होता रहता है।

सीमित परिवेश से निकलकर ऐसे व्यक्ति निश्चय ही अतुलनीय ख्याति, यश एवं प्रशंसा प्राप्त करते हैं।

३९ अंक—यह धीरता का अंक है। उर्वर मस्तिष्क एवं जीवंतता का द्योतक है। चाहे कितनी ही कठिनाइयाँ आवें, चाहे कैसी भी बाधाएँ उपस्थित हों, ये अपने मार्ग से हटते नहीं, लक्ष्यच्युत नहीं होते और इनकी सफलता का यही राज है।

पाठकों ने देखा कि तीनों ही विश्लेषण गांधी जी के लिए कितने सटीक और स्पष्ट हैं, यह कहने की आवश्यकता नहीं। नामांकन ज्ञात कर लेने से व्यक्ति के व्यक्तित्व का सही मूल्यांकन हो जाता है। उससे जीवन का पूर्ण विश्लेषण हो जाने से वह और उसका चरित्र साफ दर्पण की तरह सबके सामने स्पष्ट हो जाता है।

क्या मेरे नामांक को शुभ संख्या या शुभ नामांक में बदला जा सकता है ?

नाम के अक्षरों का या हिज्जों का जीवन में बहुत प्रभाव पड़ता है। नेपोलियन बोनापार्ट अपना नाम Napolean Bounaperte लिखता था जिसकी नामांक-संख्या यह थी—

N	एन	५
A	ए	१
P	पी	८
O	ओ	७
L	एल	३
E	ई	५
A	ए	१
N	एन	५
B	बी	२
O	ओ	७
U	यू	६
N	एन	५
A	ए	१
P	पी	८
E	ई	५
R	आर	२
T	टी	४
E	ई	५

कुल योग अस्सी हुआ। अस्सी का प्रभाव है—"पूर्ण सफलता का परिचायक यह नामांक, व्यक्ति को अत्यन्त उच्च धरातल पर प्रतिष्ठित करने में सहायक होता है।"

पर दुर्भाग्य से कुछ समय बाद उसने अपने नाम के हिज्जे बदल लिये, और अपना नाम Napolean Bounaparte

लिखना शुरू कर दिया।

पाठक देखें कि पहले Bounaperte लिखता था, अब 'ई' की जगह 'ए' लिखना शुरू कर दिया, इस प्रकार कुल नामांक ७६ ही रह गया जिसका प्रभाव है—"यह अंक अभाग्य का सूचक है।"

कहते हैं जब से उसने अपने नाम के हिज्जे बदले, तभी से वह पतन के गड्ढे में गिरता चला गया।

स्थान-भय से मैं उन सब व्यक्तियों के नाम देना ठीक नहीं समझता, पर कई लोगों ने यह बताया कि जब तक वे प्राचीन तरीके से नाम लिखते रहे, तब तक तो उनकी उन्नति होती रही और जब उन्होंने नए प्रकार से नाम लिखना शुरू किया तो उनका पतन भी प्रारम्भ हो गया, क्योंकि नये प्रकार से नाम लिखने पर नामांक-संख्या में परिवर्तन आ गया, जिसका प्रभाव भी जीवन पर व्याप्त रहा।

तब कैसे किया जाय ? नाम तो बदलना आसान नहीं है। हाँ, एक उपाय है कि नाम तो न बदला जाय, पर उसके हिज्जे बदल दिये जायँ।

उदाहरण के लिए 'नन्दकिशोर' नाम लें। पहले यह अपना नाम Nand Kishor लिखता था—

N	एन	५
A	ए	१
N	एन	५
D	डी	४
K	के	२
I	आई	१
S	एस	३
H	एच	५
O	ओ	७
R	आर	२

इसका कुल योग ३५ था, जो कि शुभ प्रभाव-युक्त नहीं था, और कठिन परिश्रम करने के बाद भी सफलता से दूर ही रहता था। यह भी सम्भव नहीं था कि वह नाम बदल ले।

मेरे सम्पर्क में आने के बाद नाम का विश्लेषण कर मैंने राय दी कि वह अपने नाम के आगे 'ए' लिखे, अर्थात् NAND KISHORA लिखे, इस प्रकार करने से उसके नामांक की संख्या ३६ हो गई, जो कि पूर्ण सफलता की द्योतक है, और आज यह एक सफल ख्याति-प्राप्त व्यक्ति है।

इसी प्रकार पाठक चाहें तो अपने नाम को शुभ प्रभावयुक्त कर सकते हैं। उदाहरणार्थ—

मान लीजिये किसी व्यक्ति का नाम चन्द्रशेखर रामानुजाचार्य है, तो वह अपना नाम सी० रामानुजाचार्य करके शुभ प्रभावयुक्त बना सकता है। यदि किसी व्यक्ति का नाम मुरलीधर श्रीवास्तव है और यह शुभ नहीं है तो वह केवल मुरलीधर लिखकर ही शुभ प्रभावयुक्त बन सकता है। इस प्रकार अपने नाम, उपनाम, नाम के हिज्जे आदि घटा-बढ़ाकर शुभ प्रभावयुक्त नामांक के द्वारा आप सफलता प्राप्त कर सकता है।

क्या मेरा नामांक मेरी जन्मतिथि के अनुरूप है ?

पाठकों को चाहिए कि अपने नामांक को जन्मतिथि के अनुरूप बनायें, तभी पूर्ण शुभ फल प्राप्त हो सकता है। उदाहरणार्थ—

अरविन्द की जन्मतिथि चार जुलाई उन्नीस सौ सड़सठ है। पहले अरविन्द का नामांक बनाया—

A	ए	१
R	आर	२
V	वी	६
I	आई	१
N	एन	५
D	डी	४

=१+२+६+१+५+४=१९

यह अरविन्द-नामांक शुभ है, क्योंकि इसका प्रभाव "यह अंक व्यक्ति की उच्चाकांक्षाओं और श्रेष्ठता एवं स्थिरता का द्योतक है" अनुकूल है।

जन्मतिथि ४-७-१९६७

योग ४+७+१+९+६+७=३४

=३+४=७

अतः जन्मतिथि का अंक ७ आया। (इसे आत्मांक भी कहते हैं।)

अरविन्द का नामांक है १९=१+९=१०

१+०=१

अतः 'नामांक मूल' अंक आया १ तथा आत्मांक आया ७।

क्या १ अंक का जन्म-तारीख-अंक ७ हितैषी है ? इसके लिये आप पृष्ठ ५५ पर वर्णित अंकों की मित्र-तालिका देखें तो १ अंक के अधिमित्र अंक हैं २ तथा ७, अतः यह जन्मतिथि अनुरूप है।

यदि जन्मतिथि शत्रु या अतिशत्रु हो तो नाम के हिज्जे इस प्रकार बनाइये कि वह नामांक की दृष्टि से तो शुभ हो ही, जन्मतिथि अर्थात् आत्मांक भी उसका मित्र हो।

पाठकों की सुविधा की दृष्टि से शत्रुमित्रादि का चार्ट सामने दिया जा रहा है।

आत्मांक — अंक नामांक	अधिमित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधिशत्रु
१	२,७	५	३,९	६	८
२	५	६,३,८	१,४	७,९	×
३	२,७,९	८	१,४	×	५,६
४	२,७	५	३,९	१,६	८
५	१,४	३	२,७,६	९,८	×
६	×	३	२,७,१,४ ५,८	×	×
७	५	६,३,८	१,४	२,९	×
८	×	३	२,७,९ ५,६	×	१,४
९	×	८	१,४,२,७ ३	६	५

ऊपर के चार्ट को देखें तो पता चलेगा कि जिनका नामांक-मूल १ है, उनके लिए आत्मांक २,७ परम मित्र, ५ मित्र, ३,९ न मित्र न शत्रु, ६ शत्रु तथा ८ परम शत्रु है।

पाठकों को चाहिए कि वे अपने नाम जन्म-तारीख (आत्मांक) तथा नामांक के अनुरूप बनाकर सफलता प्राप्त करने में भागीदार हों।

क्या यह शहर जहाँ मैं रह रहा हूँ मेरे लिये फायदेमंद है ?

इसके लिए शहर तथा नाम दोनों को अंकों में परिवर्तित कर मित्रादि चार्ट में देखना पड़ेगा।

उदाहरणार्थ—

प्रकाशचन्द्र बम्बई में रहते हैं, क्या व्यापार के लिए बम्बई शुभ है ? पहले प्रकाशचन्द्र को लें—

P पी ८
R आर २
A ए १
K के २
A ए १
S एस ३
H एच ५
C सी ३
H एच ५
A ए १
N एन ५
D डी ४
R आर २
A ए १

कुल योग आया ४३ = ४ + ३ = ७

बम्बई

B २
O ७
M ४
B २
A १
Y १

कुल योग १७ = १ + ७ = ८

क्या ७ नामांक-मूल के लिए आठ का अंक शुभ है ? मित्रादि चार्ट में देखा तो ७ अंक के लिए ८ का अंक मित्र है, अतः बम्बई में लाभ रहेगा।

इससे यह स्पष्ट हुआ कि प्रकाशचन्द्र यदि बम्बई में व्यापार करे तो वह लाभदायक स्थिति में रहेगा।

क्या मेरी पत्नी का नामांक मेरे नामांक से मेल खाता है ?

इसके लिये पति-पत्नी दोनों के नामों को अंकों में परिवर्तित करना पड़ेगा। उदाहरणार्थ क्या हरीराम का गौरी से प्रेम रहेगा ?

पहले हरीराम

H एच ५
A ए १
R आर २
I आई १
R आर २
A ए १
M एम ४

कुल योग = १६
= १ + ६ = ७

गौरी

G जी ३
A ए १
U यू ६
R आर २
I आई १

= १३
= १ + ३ = ४

अब मित्रादि चार्ट में देखा तो सात के अंक के लिए चार का अंक सम है, न शत्रु है न मित्र। अतः हरीराम के जीवन में गौरी समभाव से व्यवहार रखेगी, न अधिक अनुकूल न अधिक विपरीत।

पर चार के लिए सात का अंक अतिमित्र है, अतः गौरी के लिए हरीराम अधिक मित्र के रूप में होगा, अत्यधिक सहायक

होगा, अधिकाधिक प्रेमभाव बनाये रखेगा।

निष्कर्षतः गौरी का व्यवहार पति के लिए सामान्य रहेगा और हरीराम का व्यवहार पत्नी के प्रति अत्यधिक मधुर, सहायक एवं प्रेमपूर्ण।

इसी प्रकार प्रेमी-प्रेमिका के बारे में भी विचार किया जा सकता है।

क्या अमुक नाम का भागीदार या हिस्सेदार मेरे अनुरूप रहेगा ?

व्यापार प्रारम्भ करने से पूर्व ही भागीदार या हिस्सेदार बनाते समय उसके नामांक से उसके चरित्र का अध्ययन कर लेना चाहिए, उसके बाद स्वयं का नामांक-मूल ज्ञात कर फलाफल पर विचार कर लेना चाहिए।

उदाहरणार्थ—

देवकीनन्दन तथा मदनगोपाल यदि भागीदार बनें तो परस्पर कैसा रहेगा ?

देवकीनन्दन

D	डी	४
E	ई	५
O	ओ	७
K	के	२
I	आई	१
N	एन	५
A	ए	१
N	एन	५
D	डी	४
A	ए	१
N	एन	५

कुल योग = ४०

= ४ + ० = ४

मदनगोपाल

M	एम	४
A	ए	१
D	डी	४
A	ए	१
N	एन	५
G	जी	३
O	ओ	७
P	पी	८
A	ए	१
L	एल	३

कुल योग = ३७

= ३ + ७ = १०

= १ + ० = १

देवकीनन्दन का नामांक-मूल ४, मदनगोपाल का नामांक-मूल १ है। अब मित्रादि चार्ट में देखा, तो ४ अंक के लिए १ का अंक शत्रु है, अतः देवकीनन्दन के लिए मदनगोपाल का व्यवहार शत्रुवत् होगा। इसलिये यह भागीदारी लम्बे समय तक नहीं निभेगी। यदि १ का अंक देखें तो चार का अंक उसके सम है, अतः मदनगोपाल के प्रति देवकीनन्दन समभाव रखेगा।

इस प्रकार भागीदारी में मदनगोपाल धोखा देगा, जिससे यह भागीदारी टूटेगी, तथा सम्बन्ध-विच्छेद होगा।

क्या अमुक नाम फर्म या कारखाने के लिए उपयुक्त रहेगा ? और मेरे लिए शुभ रहेगा ?

फर्म, कारखाना, या प्रतिष्ठान का नाम ही उसका आधार होता है, अतः फर्म का नाम उपयुक्त हो, नामांक-फल की दृष्टि से शुभ हो, तथा नामांक-मूल मित्रभाव में हो।

उदाहरणार्थ—उदयशंकर एक व्यवसाय प्रारम्भ करना

चाहता है, जिसका नाम 'अरविन्द पॉकेट बुक्स' रखना चाहता है। क्या यह नाम हितकर रहेगा ? पहले उदयशंकर को लें—

U	यू	६
D	डी	४
A	ए	१
I	आई	१
S	एस	३
H	एच	५
A	ए	१
N	एन	५
K	के	२
A	ए	१
R	आर	२

कुल योग = ३१

= ३ + १ = ४

अरविन्द पॉकेट बुक्स

A	ए	१
R	आर	२
V	वी	६
I	आई	१
N	एन	५
D	डी	४
P	पी	८
O	ओ	७
C	सी	३
K	के	२
E	ई	५
T	टी	४

B	बी	२
O	ओ	७
O	ओ	७
K	के	२
S	एस	३

कुल योग = ६९

६ + ९ = १५

= १ + ५ = ६

अरविन्द पॉकेट बुक्स की नामांक-संख्या ६९ है जो कि शुभ है, क्योंकि इसका फल है—'यह कीर्ति-अंक है, यशोभागी है, तथा अपने ही कार्यों से यह फर्म (या व्यक्ति) कीर्तिसंग्रह करेगी। अपने वर्ग परिवेश और समुदाय में इसकी प्रशंसा रहेगी, तथा यह फर्म सौभाग्ययुक्त, कीर्तिवती तथा सम्मान के साथ जीवन-यापन करेगी।'

उदयशंकर का नामांक-मूल ४ है, जिसके लिए ६ का अंक अनुकूल है, अतः फर्म का नाम तो यही रक्खें (क्योंकि नामांक-मूल ६ है) पर अपने नाम के हिज्जे बदल लें, अर्थात् उदय-शंकर को अपना सरनाम भी लिखना चाहिए। उदयशंकर दवे का एक से नामांक-मूल २ हो जायगा, और इस दो के अंक का ६ मित्र है, अतः इस फर्म के स्वामी के रूप में वह हर स्थान पर उदयशंकर दवे लिखे।

सुबोध पॉकेट बुक्स

S	एस	३	P	पी	८	B	बी	२
U	यू	६	O	ओ	७	O	ओ	७
B	बी	२	C	सी	३	O	ओ	७
O	ओ	७	K	के	२	K	के	२
D	डी	४	E	ई	५	S	एस	३
H	एच	५	T	टी	४		योग = ७७	

=७+७=१४

=१+४=५

सुबोध पॉकिट बुक्स की नामांक-संख्या ७७ है, जोकि शुभ है।

पुत्र या कन्या का क्या नाम रखा जाए, जो हितकर हो ?

ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार तो जन्म के समय चन्द्रमा, नक्षत्र के जिस चरण में होगा उस चरण से संबंधित अक्षर के नाम का आद्याक्षर होगा, पर अंक-ज्योतिष के अनुसार नाम को अंकों में परिवर्तित कर देख लिया जाय कि वह संख्या उन्नतिदायक है या नहीं, उसी के अनुसार नाम बनावें, तथा उसके हिज्जे निर्धारित करें, एवं विद्यालय आदि में नाम उसी प्रकार से लिखें जिससे वह शुभ प्रभावयुक्त हो और शीघ्र उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सके।

नामांक के अनुसार कौन-सी तारीख मेरे लिए पूर्णतः अनुकूल रहेगी ?

इसके लिए आत्मांक स्पष्ट कर लिया जाय। उदाहरणार्थ—मधुसूदन किस तारीख को व्यापार प्रारम्भ करे ?

M	एम	४
A	ए	१
D	डी	४
H	एच	५
U	यू	६
S	एस	३
U	यू	६
D	डी	४
A	ए	१
N	एन	५

कुल योग=३९

=३+९=१२

=१+२=३ नामांक-मूल

अब विभादि चार्ट में देखा तो ३ अंक के लिए श्रेष्ठतम ३, ६, ९, तारीखें, एवं श्रेष्ठ ८ तारीख है।

मधु २१-१०-१९७१ को कार्य प्रारम्भ करना चाहता है, उसका मिश्र योग किया—

२+१+१+०+१+९+७+१=२२

=२+२=४

चूंकि तीन नामांक के लिए ४ सम संख्या है, अतः शुभ नहीं है, पर २४-१०-१९७१ शुभ है, क्योंकि इसका योग ७ है—

२+४+१+०+१+९+७+१=२५

=२+५=७

और तीन नामांक-मूल के लिए सात तारीख या सात का अंक श्रेष्ठतम है।

इस प्रकार हम अंक-ज्योतिष के ज्ञान से जीवन की कई समस्याओं का हल स्वयं ही ढूंढ लेते हैं, तथा सफलतापूर्वक जीवन-पथ पर उन्नति की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

अंकों द्वारा प्रश्न-विचार

अंकों द्वारा प्रश्न-विचार एक महत्त्वपूर्ण पद्धति है। भारतीय ज्योतिष में तो प्रश्न-पद्धति पर कई पुस्तकें हैं, तथा इसके कई प्रकार हैं, पर पाश्चात्य ज्योतिष भी इससे अछूता नहीं। सेफेरियल ने भी अपनी पुस्तक The Kabala of Numbers में प्रश्न-विचार पर काफी प्रकाश डाला है, इसके अतिरिक्त W. Hurdun, B. Chelthy तथा M. M. Miskore ने भी इस विषय पर गहरा प्रकाश डाला है।

पर अंक-पद्धति इनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। पाठकों के उपयोगार्थ उसे यहाँ स्पष्ट किया जा रहा है—

प्रश्न करनेवाला सबसे पहले नौ अंकों की एक संख्या लिख ले, तत्पश्चात् अंक-ज्योतिर्विद् को चाहिए कि उसमें ३ जोड़ दे, और जो योग आवे, उसके अनुसार फल कहे।

उदाहरणार्थ—एक व्यक्ति ने अपने प्रश्न का शुभाशुभ जानने के लिए निम्न संख्या लिखी—

४३८५२७५८१ = ४३
हमेशा तीन जोड़ दें = +३

योग = ४६

इस ४६ की संख्या के अनुसार जो फल हो, वह सही होगा। प्रश्न-अंकों का फल अगले पृष्ठों में स्पष्ट किया जा रहा है।

प्रश्न-कर्ता बड़ी-से-बड़ी संख्या नौ बार ९ लिख सकता है—

९९९९९९९९९ जिसका योग ८१ तथा तीन जोड़ने पर ८४ होती है। छोटी-से-छोटी संख्या ९ बार शून्य लिख सकता है—

००००००००० तथा ३ जोड़ने पर योग ३ आ सकता है।

इस प्रकार छोटी-से-छोटी संख्या तीन तथा बड़ी-से-बड़ी संख्या ८४ होती है, अतः ३ से लगाकर ८४ तक का शुभाशुभ [illegible] दिया जाता है—

३. आप परेशान हैं, तथा अपने सम्बन्धी की बीमारी से चिन्तित हैं। प्रश्न अनुकूल नहीं है, तथा कुछ ही समय बाद आपको [illegible] का सामना करना पड़ेगा।

४. आप जो कुछ भी सोच रहे हैं, वह प्रेम का मसला है, या किसी सफलता का समाचार है। निश्चय ही आप अपने उद्देश्य में सफल होंगे, पर सावधानीपूर्वक आगे बढ़ना आवश्यक है।

५. आप जो समझौता कर रहे हैं, वह इस समय तो ठीक है पर आगे जाकर यह विपरीत गुल खिलायेगा, अतः आप सावधान होकर ही कार्य करें, तथा जो कुछ भी करें भली प्रकार सोच-समझकर करें।

फिलहाल आप इस योजना को स्थगित रखिये।

७. जिस यात्रा की आप तैयारी कर रहे हैं, वह शुभ फलदायक है। आप बिना हिचकिचाहट के निश्चित होकर यात्रा करिये, आप अवश्य ही सफल होंगे।

८. उतावली करना ठीक नहीं, क्योंकि जो भी काम सोच-विचारकर धीरे-धीरे होता है वह ज्यादा सफल, ज्यादा ठोस एवं ज्यादा आनन्ददायक होता है।

९. शीघ्र ही आपका मकान बन सकेगा। योजना क्रियान्वित होगी, कामयाबी मिलेगी।

१०. आपका चिन्तन सही दिशा की ओर है। आप जिस कार्य के बारे में सोच रहे हैं, वह निश्चय सफल होगा। यदि आप किन्हीं दूरस्थ रिश्तेदारों के आगमन के बारे में सोच रहे हैं, तो

उनका आना इस समय शायद संभव न हो।

९. निश्चय ही जिस समय आपने समझौता या [illegible] नामा किया था, तभी गलती कर दी थी, जिसका परिणाम [illegible] समय भुगतना पड़ रहा है।

फिर भी, यथासंभव आप अपने पर नियन्त्रण रक्खें। [illegible] समय आने पर स्वतः ही कार्य में सफलता मिल जायगी।

१०. आप जो परेशान हो रहे हैं, इसका मूल कारण [illegible] स्वयं हैं क्योंकि लापरवाही और गलतफहमी से आप [illegible] मामला उलझाते रहे और उसी का परिणाम यह आज [illegible] स्थिति है।

आप आगे के लिए सावधान रहें। जो कुछ निर्णय [illegible] शीघ्र निर्णय लें, तभी आप अनुकूल स्थिति में आ सकते हैं।

११. आपका प्रश्न सफल है, और जिस प्रश्न के बारे [illegible] आप विचार कर रहे हैं, वह आपके पक्ष में रहेगा।

आपके मन में धोखा देने की प्रवृत्ति है, या कपट [illegible] भावना है, इसे दूर रखिये, तभी भविष्य में आपका [illegible] मधुर रह सकता है।

१२. कार्य सफल होगा। आप जिस गति और [illegible] कार्य कर रहे हैं, वह सराहनीय है। शीघ्र ही आपको शुभ [illegible]चार मिल सकेंगे।

पर अभी तक मंजिल दूर समझें, अर्थात् कार्य में [illegible] न आने दें।

१३. आपका प्रश्न अनुकूल नहीं। काम में निरन्तर [illegible] आयेंगे, तथा कार्यसिद्धि में सन्देह है। फिर भी आप प्रयत्न [illegible] रहें, इससे कुछ-न-कुछ तो बिगड़ी स्थिति सुधारने में सफल [illegible] सकेंगे।

१४. आपका प्रश्न विवाह से सम्बन्धित है। आप चिंतित [illegible] उसकी उम्र तथा विवाह में विलम्ब के भय से। यह [illegible]

[illegible] कहिन या पुत्री से सम्बन्धित हो सकती है।

१५. [illegible] उत्तम है। शीघ्र ही आपका कार्य सम्पादित [illegible] और वह भी इतनी उत्तम रीति से सम्पन्न होगा कि आप [illegible] हो उठेंगे।

[illegible] को देखते हुए कार्य शीघ्र ही आपके अनुकूल सम्पन्न [illegible]।

१६. शीघ्र ही आपको शुभ समाचार मिलेगा। जिस [illegible] के बारे में आप उतावले हैं, या जिसे जानने के लिए [illegible] है, वह समाचार कुछ ही दिनों के भीतर आपको [illegible]।

[illegible] निश्चिन्त रहें, कार्य आपके पक्ष में सिद्ध होगा।

१७. [illegible] विपरीत है। शीघ्र ही आप किसी दैवी दुर्घटना [illegible] होंगे, या रोग-ग्रस्त होंगे, अतः अच्छा हो आप पहले से [illegible] बरतें।

[illegible] की तरफ विशेष ध्यान दें।

१८. आपका विचार सही है, और आप जो कुछ सोच [illegible] है वह सफल होगा। यद्यपि यह बात निश्चित है कि इसमें [illegible] है।

[illegible] करते रहें, समय आपके अनुकूल है।

१९. आप व्यर्थ में ही परेशान हो रहे हैं, एवं परिश्रम [illegible] है। जिस कार्य के बारे में आप सोच रहे हैं, वह सफल [illegible], ऐसे आसार दिखाई नहीं देते।

[illegible] की दृष्टि से आपका प्रयास निरर्थक है।

२०. आप पत्र-व्यवहार चालू रक्खें, हो सकता है कुछ [illegible] बाद आप मनोनुकूल उत्तर पा जायें। पर एक बात [illegible] है कि आप बहुत अधिक उतावले हैं, और उतावली के [illegible] ही आपके कार्य-सम्पादन में बाधा पड़ती है, या कार्य [illegible] होते-होते रुक जाता है।

२१. प्रश्न विलम्ब का है। आपका कार्य सफल तो होगा, पर इसमें विलम्ब अपेक्षित है। यह भी साथ में कह देना [illegible] उपयुक्त रहेगा कि आप अपने-आपको समय के भरोसे छोड़ [illegible] समय स्वतः ही अवसर आने पर आपका कार्य सम्पन्न कर देगा।

२२. आप इस समय जिस समस्या से ग्रस्त हैं, वह आपकी घरेलू समस्या है, और घर के इस तनावपूर्ण वातावरण [illegible] आपको झकझोर दिया है।

जहाँ तक हो सके आप दृढ़ बने रहिये, तथा अपने [illegible] पर दूसरों को हावी न होने दें।

२३. आपका प्रश्न भौतिकता से सम्बन्धित है, पर यह [illegible] स्पष्ट है कि अभी तक आपकी मंजिल काफी दूर है। [illegible] करते रहिये। परिश्रम ही वह सीढ़ी है, जिसपर चढ़कर [illegible] सफलता के द्वार खटखटा सकते हैं।

परिश्रम, लगन एवं धैर्य बनाये रखिये, आपका कार्य [illegible] होगा।

२४. इस समय आपकी स्थिति डाँवाडोल है, तथा [illegible] है। फिलहाल आपका कार्य सम्पन्न होने के आसार दिखाई [illegible] देते। हाँ, लगभग छः महीने बाद आप इसी कार्य में [illegible] प्राप्त कर सकेंगे।

सतर्कता एवं सूझबूझ इस पूरे समय में अपेक्षित रहेगी।

२५. आपका कार्य सफल होगा और शीघ्र ही मनोवांछित सूचना मिल सकेगी। यह सब इतने अप्रत्याशित रूप से [illegible] कि आप स्वयं आश्चर्य-चकित हो उठेंगे।

आर्थिक दृष्टि से यह समय पूर्णतः आपके अनुकूल है।

२६. उतावली और अधीरता आपके लिए मृत्यु के [illegible] है, अतः धीरे-धीरे एवं सोच-विचारकर योजना बनाइये [illegible] आप लाभ उठा सकें।

आप निरन्तर असफल हो रहे हैं, और यह असफलता [illegible] से उत्पन्न है।

७. कार्य-सिद्धि होगी। जीवन में ईश्वर का सहारा सबसे [illegible] सहारा है जिसे आप छोड़ बैठे हैं, और इसलिए आप [illegible] भटक रहे हैं। सब-कुछ ईश्वर पर डाल दीजिये, आप [illegible] देखेंगे कि विपरीत परिस्थितियाँ आपके अनुकूल होती जा रही हैं।

८. आपके कार्य की सफलता संदिग्ध है। यद्यपि आप [illegible] परिश्रम कर रहे हैं तथा येन-केन-प्रकारेण कार्य के [illegible] होने की उम्मीद लगाये बैठे हैं, पर यह सब व्यर्थ है। यह कार्य सम्पन्न होना तथा बालू में से तेल निकलना बराबर है।

९. आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है, इसी कारण इस कार्य के प्रति आप उतना ध्यान नहीं दे पाते जितना देना चाहिए था।

इसलिये आपको सबसे पहले अपने स्वास्थ्य की ओर जागरूकता बरतनी चाहिए।

१०. आपका प्रश्न उत्तम है, और शीघ्र ही आपको मनोवांछित एवं अनुकूल समाचार सुनने को मिलेंगे। ये समाचार [illegible] होंगे जिससे परिवार में एवं घर में प्रसन्नता का, मुदता का वातावरण बन सकेगा।

११. अव्यवस्था प्रत्येक प्रकार की असफलता की जननी है, और आप जिस कारण से परेशान हैं, या जिस कारण से असफलता का मुँह देखना पड़ रहा है, उसका मूल कारण ही यह अव्यवस्था है।

यह बात तो निश्चित समझें कि जब तक यह अव्यवस्था रहेगी तब तक आपकी सफलता संदिग्ध ही बनी रहेगी।

१२. लेन-देन के मामले में आप निरन्तर सतर्कता बरतें, क्योंकि आगे का कुछ समय ऐसा आ सकता है जिसके फलस्वरूप

आप धोखे में रहें, या कठिनाई में पड़ जायें, अतः आगे के [illegible] पाँच महीने निरन्तर सावधानी बरतने के हैं।

३३. आप तैयार रहिये, शीघ्र ही आपको मनोवांछित समाचार सुनने को मिलेंगे। आपका प्रश्न धन से सीधा सम्बन्धित है, और जिस कार्य के लिए आप काफ़ी समय से परेशान [illegible] और जो आमदनी का स्रोत रुका हुआ था, वह शीघ्र ही [illegible] जायेगा, और इस प्रकार से लाभदायक समाचार सुनने [illegible] मिलेंगे।

३४. आपके मन में काफ़ी समय से घुमड़न चल रहा है और पसोपेश तथा असमंजस में हैं कि यह कार्य करूँ अथवा [illegible] परन्तु जहाँ तक प्रश्न का सम्बन्ध है, आपको बिना हिचकिचाहट यह समझौता कर लेना चाहिए, क्योंकि इसका सुपरिणाम शीघ्र ही आपको सुनने को मिलेगा।

३५. आप यह पक्की तरह से समझ लीजिये कि केवल मामूली जान-पहचान के बल पर इतनी बड़ी जोखिम उठाना अक्लमंदी नहीं। धीरे-धीरे उसके चरित्र का अध्ययन कीजिये, और जब आप पक्की तरह से आश्वस्त हो जायें, तभी आप उस पर विश्वास कर लेन-देन का कार्य करें।

३६. आकस्मिक लाभ का कोई योग आपके जीवन में नहीं है, अतः व्यर्थ में ही आप लॉटरी, जुआ या सट्टेबाज़ी में धन फूँक रहे हैं।

प्रश्न बाधक है, और आपके कार्य-सम्पादन में कई बाधाएं दृष्टिगोचर हो रही हैं।

३७. मुकद्दमेबाज़ी या झगड़ा या वाद-विवाद में शीघ्र ही आप ग्रस्त होंगे, और इस प्रकार एक नया सिरदर्द अपने लिए मोल ले लेंगे, अतः सलाह यही है कि निकट भविष्य में यदि वाद-विवाद की स्थिति बन जाय तो आप चतुराई से किनारा कर लें, उलझना बुद्धिमत्ता नहीं होगी।

३८. आपका स्वास्थ्य इस समय आपके अनुकूल नहीं है, और इसका कारण भी यही है कि आप शरीर को शरीर नहीं समझते, अपितु उससे जबरदस्ती काम लेते हैं।

[illegible] रहें। यद्यपि प्रश्न की दृष्टि से अगला समय आपके अनुकूल नहीं कहा जा सकता।

३९. आपका प्रश्न अनुकूल है, तथा इस समय जो भी प्रश्न आपके मन में है, वह शीघ्र ही सम्पन्न होगा। आपको चाहिए कि आप कार्य की पूर्णता के लिए तैयारी कर लें।

४०. आपका प्रश्न धन से संबंधित है, और आप चाहते हैं कि किसी प्रकार ऊँचे उठ सकें। या आप प्रोमोशन अथवा धन-लाभ के बारे में विचार कर रहे हैं।

जहाँ तक प्रश्न का संबंध है, आपके कार्य में अभी विलम्ब की संभावना है।

४१. पिछले कुछ दिनों में जो भी घटनाएं घटी हैं, वे आपके अनुकूल नहीं कही जा सकतीं, क्योंकि यह समय सर्वथा आपके अनुकूल नहीं है।

आपको चाहिए कि आप पैसों के मामले में लापरवाही न करें और न पैसों को दांत से पकड़ें, क्योंकि दोनों ही स्थितियों में आपके सम्मान को खतरा है।

४२. जहाँ तक हो सके आप दोनों परस्पर ही निपट जायें तो अच्छा रहेगा। व्यर्थ का वाद-विवाद आपके हित में नहीं है। आपको चाहिए कि आप संयमित रहें, और अपने-आपको पूर्ण नियंत्रण में रखें। प्रश्न आपके अनुकूल नहीं है।

४३. आपका प्रश्न किसी पुरानी जायदाद के विषय में हो सकता है, तथा उससे संबंधित मुकद्दमे में ग्रस्त हो सकते हैं।

यद्यपि आपको धैर्य की आवश्यकता है, पर यह भी निश्चित समझिये कि यह कार्य अंततः आपके पक्ष में ही होगा।

प्रश्न विलम्ब से सिद्धिप्रद है।

४४. अत्यधिक श्रम और कम-से-कम आराम मृत्यु को ही निमंत्रण है और आप इसी पथ पर अग्रसर हो रहे हैं। हाँ, यह आवश्यक है कि जीवन-पथ पर बढ़ने के लिए श्रम अनिवार्य है, पर श्रम के साथ-साथ आराम भी कीजिये।

कार्य-सिद्धि में संशय है।

४५. आप निश्चिन्त रहें, शीघ्र ही आपको शुभ समाचार सुनने को मिलेंगे, और जिस समाचार के लिए आप उतावले हो रहे हैं, वह शुभ समाचार निकट भविष्य में ही मिल सकेगा।

प्रश्न पूर्ण अनुकूल एवं शुभ फलदायक कहा जा सकता है।

४६. आप व्यर्थ में ही परिश्रम कर रहे हैं। जो कार्य आप सोच रहे हैं, वह अनुकूल नहीं हो सकता, यह आप निश्चित समझिये।

यद्यपि इस कार्य की सफलता के लिए आपको कठोर श्रम करना पड़ा है, अत्यधिक व्यय करना पड़ा है, फिर भी प्रश्नफल आपके हित में आवे ऐसा प्रतीत नहीं होता।

४७. मुकद्दमेबाज़ी से संबंधित आपका प्रश्न हो सकता है और सही अर्थों में देखा जाय तो आप इस मुकद्दमेबाज़ी से ऊब गये हैं और किसी प्रकार इससे पिण्ड छुड़ाना चाहते हैं। जहां तक प्रश्न का फल है, आपको आगे बढ़कर समझौता कर लेना चाहिए।

४८. प्रश्न आपके अनुकूल है, और आप जो कुछ भी सोच रहे हैं, वह शीघ्र ही आपके पक्ष में रहेगा। परन्तु इसके साथ ही आप यह भी ध्यान रखिये कि प्रयत्न लगातार होते रहना चाहिए क्योंकि कार्य-समाप्ति से पूर्व ही प्रयत्न छोड़ देना असफलताओं को न्यौता देना है।

४९. आप इस समय जिन परेशानियों में ग्रस्त हैं, आनेवाले समय में वे परेशानियाँ और भी ज्यादा बढ़ सकती हैं।

आप अत्यधिक विश्वासी हैं, और यह अत्यधिक विश्वास ही

आपको धोखे के गर्त में गिराने में सहायक होता है। अतः अधिक अच्छा हो यदि आप समझदारी एवं सूझबूझ से काम लें।

५०. आप शीघ्र ही यात्रा करेंगे, और यह यात्रा अत्यन्त कष्टप्रद रहेगी। हो सकता है, मार्ग में कुछ अघटित घट जाय।

एतदर्थ जहाँ तक हो सके आप यात्रा को स्थगित कर दें।

५१. प्रश्न अत्यधिक उच्चकोटि का है। शीघ्र ही आपको आकस्मिक लाभ होगा, या जो कार्य आप सोच रहे हैं और उसमें विलम्ब की संभावना पर विचार कर रहे हैं, वह शीघ्र ही सम्पन्न हो सकेगा, और यह सम्पन्नता भी इतनी आकस्मिक ढंग से होगी कि आप चकित रह जायेंगे।

५२. आप जिस कार्य के बारे में सोच रहे हैं, वह निस्सन्देह सफल होगा, और आपके इस कार्य में एक और परिचित मित्र सहायक होगा जो आपको बहुत अधिक सहायता देगा।

प्रश्न उत्तम है।

५३. आपकी उलझनें निश्चित रूप से आप द्वारा ही निर्मित हैं। आप व्यर्थ में ही बहुत अधिक सोचते हैं, और अकारण भावी विपत्ति से परेशान और हतोत्साहित हो रहे हैं।

आप धैर्य रखिये, यद्यपि प्रश्न की दृष्टि से कार्य-सम्पन्नता में विलम्ब हो सकता है।

५४. जो समय चल रहा है, वह आपके पक्ष में है, भले ही आपको यह अनुभव न हो रहा हो। पर एक बात का खयाल रखें कि जो प्रयत्न करके जोर-जबरदस्ती से आगे बढ़ जाता है, वह हमेशा लाभदायक स्थिति में रहता है।

५५. आपका प्रश्न विपत्ति से संबंधित है, और दिमाग में यही उलझन घुमड़ रही है कि किस प्रकार इस विपत्ति से छुटकारा मिल सकता है।

यह विपत्ति आपके ही कर्मों का फल है। आपको चाहिए कि हिम्मत से काम लें और कुछ समय तक सुसमय की प्रतीक्षा

करें।

'जब नीके दिन आइहैं बनत न लगिहै बेर।'

५६. आप निश्चिन्त रहें, मस्तिष्क में जो उलझन काफी समय से घुमड़ रही है, वह शीघ्र ही समाधान पा सकेगी, और इस अंधेरे में भी आप अपने पथ को आलोकित कर सकेंगे।

भावी समय आपके अनुकूल है।

५७. आपकी आर्थिक चिन्ता स्वाभाविक है क्योंकि धन से संबंधित कार्य के लिए आप प्रयत्न एक-दो दिन से नहीं, काफी समय से कर रहे हैं। अतएव आप एक प्रकार से खिन्नता या हीनता भी अपने-आप में अनुभव कर रहे हैं।

प्रश्न विलम्ब से सिद्ध होगा, ऐसा प्रतीत हो रहा है।

५८. आप जिस व्यक्ति के लिए चिंतित हैं, निश्चित समझिये कि उसके विचार एवं भावनाएँ आपके अनुकूल नहीं रहीं, और वह उतना ध्यान आपके प्रति नहीं देता है, जितना देना चाहिए।

प्रश्न सामान्य है।

५९. आपका प्रश्न रोग से संबंधित है, और आप किसी रोगी की चिंतनीय स्थिति से परेशान हैं। जहां तक प्रश्न का सवाल है, आप चिन्ता न करें, वह शीघ्र ही रोग-मुक्त हो सकेगा।

६०. प्रश्न का सीधा संबंध ईश्वर, ब्रह्म या किसी ऐसी ही अलौकिक विभूति से संबंधित है जो साधारण नहीं है। आप अपने प्रयत्न में लगे रहिये, शीघ्र ही आप सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

प्रश्न सामान्यतः शुभ कहा जा सकता है।

६१. आपका प्रश्न सफल है, और धीरे-धीरे आप यह अनुभव करेंगे कि जो परिस्थितियां अभी तक आपके प्रतिकूल थीं अब अनुकूल बनने लगी हैं, और पहले से ज्यादा सुखमय स्थिति है।

प्रश्न को देखते हुए शीघ्र ही सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

६२. आपकी लापरवाही ही आपके पतन का कारण है, क्योंकि गत जीवन में कई बार ऐसा हुआ है कि बिना पढ़े, बिना सोचे-विचारे आपने पत्रों पर हस्ताक्षर कर दिये हैं, और निकट भविष्य में इसी वजह से आप परेशानी अनुभव करेंगे।

भविष्य में आपको चाहिए कि आप जहाँ तक संभव हो, कागज पढ़-समझकर ही सतर्कता से उसपर हस्ताक्षर करें।

६३. जायदाद के बारे में आप चिन्ता न करें। हाँ, यह बात तो सही है कि इस कार्य में काफी व्यवधान है तथा कई परेशानियाँ उठानी पड़ सकती हैं, पर यह भी निश्चित समझिये कि अन्ततोगत्वा आप अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

प्रश्न विलम्ब से ही सही, आपके लिए सिद्धिप्रद है।

६४. प्रश्न आपके अनुकूल नहीं है, और इस संबंध में आप जितना भी प्रयत्न करेंगे, वह सब निष्फल जाएगा, इसलिये अच्छा तो यही होगा कि आप कुछ समय के लिए शान्त रहें।

प्रश्न सामान्य है।

६५. शीघ्र ही आपकी यात्रा का योग बन रहा है, और जिस कारण से आप यात्रा करने की सोच रहे हैं, वह कार्य आपके पक्ष में ही सिद्ध होगा।

यह भी ध्यान रखें कि इन सब कार्यों में शीघ्रता अपेक्षित है। जितना भी विलम्ब होगा, उतना ही नुकसान आपको होता जाएगा।

प्रश्न सफल है।

६६. प्रश्न काफी उलझनपूर्ण एवं कठिनाइयों से भरा हुआ है। आप स्वयं देखेंगे कि एक समस्या का समाधान करते-न-करते दूसरी समस्या स्वतः ही आपके सामने उपस्थित हो जाती है, और इस प्रकार आप अन्तहीन समस्याओं से जूझते जा रहे हैं।

अभी तक परेशानियों का अन्त नहीं आया है, फिर भी आप संघर्षरत बने रहिये ।

६७. प्रश्न निरर्थक है । आप जितना प्रयत्न करेंगे, वह सब व्यर्थ एवं निष्फल जाएगा, इसलिए इस संबंध में व्यय करना एकदम व्यर्थ है । अच्छा तो यह है कि आप इस मसले को छोड़ें और कोई अन्य उपाय सोचें, जिससे कार्य-सिद्धि में सफलता मिल सके ।

६८. प्रश्न सफल है । आप जिस तत्परता एवं लगन से इस कार्य में डटे हुए हैं, उसी तत्परता से लगे रहिये । आप स्वयं देखेंगे कि थोड़े ही दिनों के भीतर आप अपनी मनोकामना सिद्ध कर सकेंगे ।

समय आपके अनुकूल है ।

६९. यह समय आपके व्यापार-व्यवसाय का है और यदि आप इन दिनों में प्रयत्न करें, तो अन्य समय की अपेक्षा इन दिनों किये गये निर्णयों से ज्यादा लाभ उठा सकते हैं ।

जब श्रेष्ठ दिन हों या अनुकूल समय हो तो बुद्धिमान् व्यक्ति उसके एक-एक क्षण का उपयोग करते हैं । आप एक क्षण भी व्यर्थ न खोवें ।

७०. आपका प्रश्न पत्नी से संबंधित है, और प्रश्न सामान्यतः आपके अनुकूल है । आपने जिस कार्य के बारे में प्रश्न किया है, वह आपके अनुकूल है, तथा शीघ्र ही सुसम्वाद सुनने को मिलेगा ।

आप जिस तरीके से आगे बढ़ रहे हैं, वह सही है ।

७१. गफलत व्यक्ति की भयंकर दुश्मन है । आप योग्य हैं, अनुभवी हैं, श्रेष्ठ हैं, सब-कुछ होते हुए भी आप अकर्मण्य एवं आलसी हैं, इसलिये आप उतनी सफलता प्राप्त नहीं कर सकते जितनी होनी चाहिए ।

आलस्य को छोड़ दें तो आप शीघ्र ही अनुभव करेंगे कि

आप पहले से ज्यादा सुविधाजनक स्थिति में हैं ।

७२. आपका प्रश्न धन से संबंधित है और आप चिंतित हैं कि किस प्रकार द्रव्योपार्जन हो, या जो मेरा पैसा रुका है, वह आयेगा या नहीं । लगभग यह या इसी प्रकार के प्रश्न हो सकते हैं ।

प्रश्न आपके अनुकूल है, तथा द्रव्योपार्जन के कुछ नये स्रोत बनेंगे जिससे आप लाभदायक स्थिति में रहेंगे ।

७३. प्रश्न की दृष्टि से आप आनेवाले कुछ समय में उलझनपूर्ण स्थिति में रहेंगे, तथा कुछ व्यावहारिक कठिनाइयाँ भी उपस्थित होंगी, अतएव आप शांति से इस समय को व्यतीत कर दें तो ज्यादा उचित रहेगा ।

हो सकता है अगले कुछ समय में व्यर्थ का व्यय हो जाय, या परेशानियाँ बढ़ जायँ, या कोई घाटा दे जाय । आप सभी दृष्टियों से सतर्क रहिये ।

७४. आपका प्रश्न पत्नी या ससुराल या इसी से मिलते-जुलते किसी विषय से संबंधित हो सकता है, पर आप चिन्ता न करें, क्योंकि आपकी शंका निराधार है ।

आनेवाले कुछ समय में आप इस पक्ष से लाभ उठा सकेंगे ।

७५. प्रश्न श्रेष्ठतम है । आप निश्चिन्त रहिये कि कुछ ही समय में आपकी इस समस्या का समाधान हो जाएगा, साथ ही लाभ भी उठा सकेंगे ।

प्रश्न की दृष्टि से यही समय आपके अनुकूल है । आप प्रयत्न कीजिये, सफलता जयमाला लिये स्वागतहेतु उपस्थित है ।

७६. आनेवाले कुछ ही महीनों के भीतर एक ऐसी योजना आपके सामने उपस्थित होगी, जो आपके लिए तो लाभदायक होगी ही, आपके परिवार के लिए भी सुखवर्धक एवं श्रेष्ठ होगी;

अतः जिस गति से आप आगे बढ़ रहे हैं, उसी गति से आप अग्रसर होते रहें।

समय आपके पक्ष में है।

७७. यह प्रश्न द्वन्द्वात्मक है, अर्थात् आप जिस विषय को लेकर चिंतित हैं, वह सम्पन्न हो ऐसे आसार फिलहाल दिखाई नहीं देते, इसलिए आनेवाले समय में दो पक्षों के बीच पारस्परिक मतभेद उग्र होगा, कठिनाइयाँ बढ़ेंगी, एवं समस्याओं से ग्रस्त होकर मानसिक परेशानियों में उलझना पड़ेगा।

आपको आगाह किया जाता है कि आप सतर्क एवं सावधान रहें!

७८. आप व्यर्थ में चिन्ता न करें, क्योंकि कोई भी कार्य चमत्कार से ही सम्पन्न नहीं हो जाता। प्रत्येक कार्य के लिए कुछ-न-कुछ समय अपेक्षित है। अतः यदि आप धैर्य से प्रतीक्षा करें तो आप स्वयं अनुभव करेंगे कि कार्य आपके पक्ष में सिद्ध होता जा रहा है।

उतावली का प्रदर्शन न करें!

७९. आप अपनी उन्नति के बारे में चिंतित हैं, या अपने से सम्बन्धित किसी मसले को लेकर परेशान हैं। जहाँ तक प्रश्न का सम्बन्ध है, अभी आपकी कार्य-सिद्धि में देरी है, और कुछ समय के बाद यदि आप प्रयत्न करें तो लाभ उठा सकते हैं।

अधिकारियों के प्रति आदर-भाव रखें।

८०. आप लाभ-हानि के झूले में झूल रहे हैं, और अनुभव कर रहे हैं कि क्या किया जाय?

जहाँ तक प्रश्न का सम्बन्ध है, इस समय स्थिति आपके पक्ष में नहीं है। सावधानी से लेन-देन करें।

८१. आपकी समस्या अर्थ से सम्बन्धित है और चाहते हैं कि इस सम्बन्ध में जो भी विवाद है वह शान्त हो जाय, या हल हो जाय।

मगर प्रश्न की दृष्टि से आप उतावली न दिखावें, क्योंकि समय और स्थिति अपने-आप आपके पक्ष में होती जा रही है, और ज्यों-ज्यों समय बीतेगा, आप ज्यादा लाभदायक स्थिति में रहेंगे।

८२. आपने जो प्रश्न सोचा है वह सिद्ध या सफल हो, इसमें सन्देह है, क्योंकि अभी तक तो कई अड़चनें एवं बाधाएँ मार्ग में हैं जिन्हें हल करना परमावश्यक है।

८३. आपका प्रश्न व्यापार से संबंधित है, और आप व्यापार के हानि-लाभ के बारे में जानना चाहते हैं।

आपका प्रश्न सफल है। शीघ्र ही मनोवांछित सफलता मिलेगी।

८४. आप प्रयत्न कीजिए और बिना हिचकिचाहट के प्रयत्न कीजिए। निश्चय ही आपके पक्ष में कार्य-सिद्धि होगी तथा घर में प्रसन्नता एवं मंगलमय वातावरण बन सकेगा।

प्रश्न सफल एवं उत्तम है।

ऊपर पाश्चात्य दृष्टिकोण से हमने प्रश्न-तंत्र के बारे में विचार किया, पर भारतीय ज्योतिष में भी प्रश्न-ज्ञान से संबंधित प्रचुर प्रयोग हैं। उनमें से पाठकों के लाभार्थ कुछ यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

यद्यपि यह सत्य है कि प्रश्न कई प्रकार के होते हैं तथा कई वर्गों में बांटे जा सकते हैं, पर मूलरूप से प्रश्न नौ भागों में ही विभाजित किये जा सकते हैं—

१. जय-पराजय प्रश्न।
२. लाभ-हानि प्रश्न।
३. सुख-दुःख प्रश्न।
४. जीवन-मरण प्रश्न।
५. गमन-आगमन प्रश्न।
६. गर्भ-अगर्भ प्रश्न।

७. पुत्र-पुत्री प्रश्न।
८. विवाह-प्रश्न।
९. तेजी-मंदी प्रश्न।

यद्यपि इनसे इतर भी प्रश्न हो सकते हैं, पर सामान्यत: यही प्रश्न पूछे जाते हैं। अब आगे के पृष्ठों में इनमें से प्रत्येक पर विचार किया जाएगा।

जय-पराजय प्रश्न—अधिकतर प्रश्न ऐसे होते हैं, जिनका सम्बन्ध मुकद्दमे से होता है या परस्पर विरोध, द्वन्द्व तथा संघर्ष में हार-जीत से सम्बन्धित होता है।

'समरसार' में इसके लिए एक अनुभूत प्रयोग दिया है। उसमें प्रत्येक अक्षर के अंक निर्धारित कर दिये हैं जो कि इस प्रकार से हैं—

अ	५	ए	१
आ	५	ऐ	८
इ	३	ओ	८
ई	३	औ	८
उ	३	अं	९
ऊ	६	अ:	१
क	५	ट	८
ख	५	ठ	८
ग	३	ड	९
घ	३	ढ	५
च	३	त	५
छ	६	थ	३
ज	६	द	३
झ	८	ध	३
		न	६

प	६
फ	८
ब	८
भ	८
म	९
य	५
र	५
ल	३
व	३
श	३
स	६
ष	६
ह	८
क्ष	८
त्र	८
ज्ञ	९

अब जिन दो नामों पर विचार करना हो उनके समग्र अंक बना लें, फिर हार-जीत का निर्णय कर लिया जाय।

उदाहरणार्थ—रामकिशन तथा हरिगोपाल में परस्पर मुकद्दमेबाजी है, तो इनमें से कौन जीतेगा ?

पहले दोनों के नामों का विश्लेषण कर अंक स्पष्ट किया—

र	५
आ	५
म	९
क	५
इ	३
श	३
न	६
	कुल योग = ३६

रामकिशन के समग्र अंक ३६ हुए।

अब हरिगोपाल के नाम का विश्लेषण किया जाय—

ह	८
र	५
इ	३
ग	३
ओ	८
प	६
आ	५
ल	३
	कुल योग=४१

हरिगोपाल के समग्र अंक ४१ हुए।

अब दोनों के समग्र अंकों में अलग-अलग रूप से ८ का भाग दें, जिसके ज्यादा शेष रहें वही बली होगा।

ऊपर के उदाहरण में रामकिशन के समग्र अंक ३६ में ८ का भाग दिया तो शेष ४ रहे।

हरिगोपाल के समग्र अंक ४१ में ८ का भाग दिया तो शेष १ रहा।

अतः उपर्युक्त दोनों में रामकिशन नाम में शेष ज्यादा रहे हैं, अतः इस मुकद्दमेबाजी में रामकिशन विजयी रहेगा।

लाभ-हानि प्रश्न—केरलीय प्रश्न-संग्रह में लाभ-हानि पर अभूतपूर्व प्रयोग हुए हैं। जब लाभ-हानि के बारे में प्रश्न पूछने के लिए कोई आवे तो उससे किसी पुष्प का नाम उच्चारित करावे, फिर उस पुष्प के नाम को संख्या में परिवर्तित कर दे।

केरलीय मतानुसार वर्णशक्ति इस प्रकार है :

अ	१२
आ	२१
इ	११

ई	१८
उ	१५
ऊ	२२
ए	१८
ऐ	३२
ओ	२५
औ	१६
अं	२५
क	१३
ख	११
ग	२१
घ	३०
ङ	१०
च	१५
छ	२१
ज	२३
झ	२६
ञ	२६
ट	१०
ठ	१३
ड	२२
ढ	३५
ण	४५
त	१४
थ	१८
द	१७
ध	१३

न ३५
प २७
फ १८
ब २६
भ २७
म २६
य १६
र १२
ल १३
व ३५
श २६
स ३५
ष ३५
ह १२

यह वर्णशक्ति या प्रत्येक अक्षर से संबंधित संख्या काफी महत्वपूर्ण है और इसका एक निश्चित उद्देश्य है।

अब मूल विषय पर आवें। उदाहरणार्थ—किसी ने आकर प्रश्न किया कि इस बार मैं गेहूँ की खरीद करूँ तो लाभ रहेगा या हानि ?

उससे कहा जाय कि वह किसी पुष्प का नाम उच्चारित करे।

और उसने 'चमेली' नाम उच्चारित किया तो हमें 'चमेली' शब्द को संख्या में परिवर्तित करना पड़ेगा—

च १५
म २६
ए १८
ल १३
ई १८

कुल योग = ९०

योगफल में सदैव ४५ जोड़कर ३ का भाग दें, यदि

१ बचे तो विशेष लाभ,
२ बचें तो सामान्य लाभ,
० बचे तो हानि।

ऊपर के उदाहरण में योग ९० आया ; ४५ जोड़ें।

९० + ४५ = १३५ ÷ ३ = ४५, शेष ०

योगफल १३५ में ३ का भाग दिया तो लब्धि ४५ तथा शेष ० बचा, अतः इस बार गेहूँ की खरीद की गई तो हानि ही होगी।

सुख-दुःख प्रश्न—सुख-दुःख प्रश्न में जातक को किसी फल के नाम का उच्चारण करने को कहा जाय, फिर फल की समग्र संख्या जोड़ने के बाद उसमें ३५ जोड़कर २ का भाग दिया जाय, यदि

शेष १ बचे तो सुख,
शेष ० बचे तो दुःख होगा।

उदाहरणार्थ—किसी ने आकर पूछा कि हरिराम के साथ व्यापार करने से मुझे सुख मिलेगा या दुःख ?

उससे किसी फल के नाम को उच्चारित करने के लिए कहा, तो उसने नारियल का नाम लिया। 'नारियल' शब्द के समग्र अंक बनाये—

न ३५
आ २१
र १२
इ ११
य १६
ल १३

कुल योग = १०८

समग्र अंक १०८ में ३८ जोड़े तो योगफल १४७ आया, इसे

दो से विभाजित किया तो शेष १ रहा, अतः इसके साथ व्यापार करने से सुखप्राप्ति ही होगी।

जीवन-मरण प्रश्न—कई बार ऐसे प्रश्न किये जाते हैं कि अमुक रोगी बच सकेगा या मृत्यु को वरण कर लेगा? इस प्रकार के प्रश्नों के लिए निम्न अंक-बल ध्यान में रखना चाहिए—

अ	क	ड	म	६
आ	ख	ण	य	१
इ	ग	त	र	२
ई	घ	थ	ल	४
उ	च	द	व	८
ऊ	छ	ध	श	६
ए	ज	न	स	६
ऐ	झ	प	ष	४
ओ	ट	फ	ह	३
औ	ठ	ब	...	०
अं	ड	भ	...	१

अर्थात अ, क, ड, तथा म अक्षरों का अंक-बल ६ है इसी प्रकार आ, ख, ण, तथा य अक्षरों का संख्या-बल १ है, इसी प्रकार आगे भी समझना चाहिए।

अब प्रश्न पूछा जाय कि मदनगोपाल माथुर, जो कि इस समय रोग-ग्रस्त हैं, बच सकेंगे या नहीं? तब सर्वप्रथम मदन-गोपाल माथुर को अंकों में परिवर्तित किया—

म	६
द	८
न	६

ग	२
ओ	३
प	४
आ	३
ल	४
म	६
आ	३
थ	४
उ	८
र	२

कुल योग = ६२

योग में उस दिन की तारीख जोड़कर योग-फल में ३ का भाग दिया जाय, २ शेष बचे तो रोग-मुक्त, १ शेष बचे तो न्यूनाधिक रूप से रोग बना रहेगा, तथा शून्य बचे तो मृत्यु समझना।

ऊपर के उदाहरण में मानो यह प्रश्न १४ तारीख को किया गया था, तो नामांक ६२ में १४ जोड़े, योग ७६ आये, इसमें ३ का भाग दिया, शेष १ रहे, अतः मदनगोपाल माथुर निश्चय ही रोगमुक्त हो जावेंगे।

गमन-आगमन प्रश्न—इससे सम्बन्धित भी कई प्रश्न हो सकते हैं, यथा मैं विदेश जा सकूंगा या नहीं? मेरे पति लखनऊ से इस अवसर पर आयेंगे या नहीं? क्या मैं कल यात्रा कर सकूंगा? आदि कई प्रश्न हो सकते हैं।

इनके लिए वर्णमाला का प्रयोग किया जाय—

अक्षर	अंक
अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः	८
	५
क ख ग घ ङ	६
च छ ज झ ञ	

ट ठ ड ढ ण	४
त थ द ध न	७
प फ ब भ म	१
य र ल व	३
श ष स ह	२

अब जिसके बारे में प्रश्न किया जाय, उसके तथा वह जहाँ रहता है, उन दोनों का बल ज्ञात किया जाय, फिर उसमें प्रश्न पूछने की तारीख, महीना व सन् जोड़ें तथा योगफल में ३ का भाग दें, यदि

२ शेष बचे तो शीघ्र लौटेगा

१ शेष बचे तो विलम्ब से लौटेगा

० शेष बचे तो फ़िलहाल नहीं लौटेगा।

उदाहरण—एक स्त्री ने प्रश्न किया कि मेरा पति प्रभुदयाल शर्मा जो कि इस समय इलाहाबाद में है, इन दिनों लौटेंगे ? (जोकि मान लो उसके पुत्र का जन्म-दिन है) प्रश्न पूछने की तारीख १७-५-१९७१ है।

पहले प्रभुदयाल को संख्या में परिवर्तित किया—

प	१
र	३
अ	८
भ	१
उ	८
द	७
य	३
आ	८
ल	३
श	२
अ	८
र	३
म	१
आ	८

कुल योग = ६४

अब इलाहाबाद को संख्या में परिवर्तित किया—

इ	८
ल	३
आ	८
ह	२
आ	८
ब	१
आ	८
द	७

कुल योग = ४५

दोनों का योग ६४ + ४५ = १०९

दिनांक १७-५-१९७१ योग = ३१

कुल योग १०९ + ३१ = १४० ÷ ३ = ४६ लब्धि, शेष = २

अतः प्रभुदयाल शर्मा इलाहाबाद से शीघ्र लौटेंगे।

गर्भ-अगर्भ प्रश्न—गर्भ-अगर्भ प्रश्न सीधा है। मेरे गर्भ है या नहीं, लगभग ऐसे ही प्रश्न इससे सम्बन्धित हो सकते हैं।

इसमें प्रश्न पूछनेवाले के नाम के अक्षर, उस शहर के अक्षर जहाँ प्रश्न पूछा जा रहा है तथा दिनांक जिस दिन वह प्रश्न पूछा जाय, इन सबका योग कर २ से भाग दे दिया जाय। १ बचे तो गर्भ है, एवं ० बचे तो गर्भ नहीं है, ऐसा जानना चाहिए।

उदाहरणार्थ—रामदुलारी ने जोधपुर में १९-७-७१ को यह प्रश्न पूछा कि क्या पंडित जी, मेरे गर्भ है ?

पूर्वोक्त विधि के प्रयोग में हलन्त या अर्द्धाक्षर भी पूरा अक्षर गिनना चाहिए। इस प्रकार रामदुलारी=५ अक्षर

जोधपुर=४ "

१६-७-७१ योग—२५ "

कुल योग—३४"

३४ में २ का भाग दिया तो शेष शून्य रहा, अतः इस समय गर्भ नहीं है, ऐसा समझना चाहिए।

पुत्र-पुत्री प्रश्न—मेरे पुत्र होगा या पुत्री, इस प्रश्न के उत्तर के लिए, पति-पत्नी दोनों के नामों का विश्लेषण कर अंकों में परिवर्तित करें, फिर उसमें सन् जोड़ दें, एवं योगफल में से ७४४ घटा दें, शेष जो संख्या रहे, उसे दो से भाग दें। १ शेष बचे तो पुत्र तथा ० शेष बचे तो पुत्री समझना चाहिए।

इसके लिए निम्न अंक-चक्र काम में लें—

अ क ट ब	६
आ ख ठ भ	३
इ ग ड म	६
ई घ ण य	०
उ ङ त र	३
ऊ च थ ल	४
ए छ द व	४
ऐ ज ध श	०
ओ झ न ष	०
औ ञ प स	०
अं ट फ ह	३

मान लो पति का नाम महेशचन्द्र तथा पत्नी का नाम पार्वती है। सन् १९७० में किसी तारीख को यह प्रश्न किया कि मेरे पुत्र होगा या पुत्री?

म	६
अ	६
ह्	३
ए	४
श	०
अ	६
च	४
अ	६
न	०
द	४
र	३
अ	६

कुल योग=४८

प	०
आ	६
र	३
व	४
अ	६
त	३
ई	०

कुल योग=२२

४८+२२=७०

सन् १९७०
+७० जोड़े
२०४०
—७४४ घटायें
१२९६

१२९६÷२=शेष ०

अतः इस वर्ष पुत्री होगी, ऐसा समझना चाहिए।

विवाह-प्रश्न—इस प्रकार के भी कई प्रश्न आते हैं कि क्या इस वर्ष मेरा विवाह होगा ? क्या मेरी कन्या की शादी इस वर्ष हो जाएगी ? क्या मैं जिससे प्रेम कर रहा हूँ, उस लड़की के साथ मेरा विवाह होगा ? ऐसे प्रश्न कई बार विशेषतः विचारणीय होते हैं।

इसके लिए प्रश्नकर्ता से कहें कि वह १ से लगाकर १५ तक में से कोई एक संख्या बोले। वह जो भी संख्या कहे, उसके अनुसार निम्न फल कहें—

१	यह कार्य असम्भव है।
२	विलम्ब होगा।
३	कार्य-सिद्धि होगी।
४	कार्य-सिद्धि संदिग्ध है।
५	काफी प्रयत्नों के बाद सफलता हो सकेगी।
६	अभी व्यवधान है।
७	कुछ विलम्ब से कार्य सिद्ध हो जायगा।
८	सफलता नहीं मिलेगी।
९	विलम्ब स्वाभाविक है।
१०	यह कार्य नहीं हो सकेगा।
११	प्रयत्न करने पर सफलता मिलेगी।
१२	निश्चित सफलता मिलेगी।
१३	आपका प्रयास व्यर्थ जायेगा।
१४	प्रयत्न करने पर लाभ होगा।
१५	शीघ्र ही आपको सफलता मिलेगी।

तेजी-मंदी प्रश्न—यों तो तेजी-मंदी जानने के लिए सर्वतोभद्र प्रयोग है, जिसके माध्यम से बिल्कुल सही-सही अचूक एक-एक घण्टे की तेजी-मंदी ज्ञात की जा सकती है, पर वह काफी गूढ़ एवं जटिल है। अंक-वेत्ताओं ने भी इस समस्या का हल

निकालने का प्रयास किया है, जो इस प्रकार है—

तेजी-मंदी जानने के लिए निम्न अंक-बल पर ध्यान दें—

अ	क	ठ	ब	६
आ	ख	ड	भ	३
इ	ग	ढ	म	२
ई	घ	ण	य	४
उ	ङ	त	र	७
ऊ	च	थ	ल	६
ए	छ	द	व	४
ऐ	ज	ध	श	३
ओ	झ	न	स	१
औ	ञ	प	ष	०
अं	ट	फ	ह	१

स्थानों के नाम तथा वस्तु के नाम को अंकों में परिवर्तित करें। उसमें दिनांक जोड़ दें। योग-फल में २ का भाग दें। शेष १ बचे तो भाव तेज होंगे तथा ० बचे तो भाव मंदे रहेंगे।

पर यह ध्यान रहे कि यह प्रभाव मात्र ३० दिनों तक ही समझना चाहिए।

उदाहरणार्थ—किसी ने १४-८-७१ को प्रश्न किया कि जयपुर में चावलों का भाव मंदा रहेगा या तेज ?

ज	३
अ	६
य	४
अ	६
प	०
उ	७
र	७
अ	६

कुल योग=३६

चावल—

च	६
आ	१
व	४
अ	६
ल	६
अ	६
	योग=३१

दिनांक-योग १४-८-१९७१=३१

कुल योग ३६+३१+३१=१०१

योगफल १०१ में २ का भाग दिया तो शेष १ रहा, अतः १४-८-७१ से १४-९-७१ तक जयपुर में चावलों का भाव सामान्यतः तेजी पर ही रहेगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अंकों के माध्यम से हम अपनी कई समस्याओं का निपटारा कर सकते हैं, तथा साथ-ही-साथ अज्ञात भविष्य को भी समझने का प्रयत्न कर सकते हैं। इस प्रकार से अंक-विज्ञान हमारे लिए निस्सन्देह उपयोगी है।

शुभ-समय

अधिकतर यह प्रश्न उभरकर सामने आता है
शुभ कार्य के लिए किस तारीख, वार या समय
जिससे हमें शत-प्रतिशत सफलता मिल सके ? शुभ
सकते हैं, यथा किसी अधिकारी से मिलने किस
वार को जावें ? कब पत्र लिखें जिसका पूर्णतः
परीक्षा का फॉर्म कब भरें ? प्रेमी या प्रेमिका से मि
सा समय निर्धारित करें ? दुकान का मुहूर्त कब करें
ऐसे कई प्रश्न हैं जिनका समाधान जरूरी है।

जन्म-तारीख यदि ज्ञात हो तो मूलांक ज्ञात
सकता है। १ से ९ तक के अंक मूलांक होते हैं,
अंकों को जोड़कर मूलांक बनाये जाते हैं, उदाहरण
भी महीने में यदि किसी का जन्म ८ तारीख को होगा
मूलांक भी ८ होगा। पर यदि किसी का जन्म २१
होगा तो उसका मूलांक २+१=३ होगा।

चूँकि अंग्रेजी पद्धति के अनुसार किसी भी महीने
से ज्यादा नहीं होते, अतः १ तारीख से ३१ तारीख
स्पष्ट किये जा रहे हैं—

जन्म-तारीख	मूलांक
१	१
२	२

कुल योग=३९

चावल—

च	६
आ	३
व	४
अ	६
ल	६
अ	६

योग=३१

दिनांक-योग १४-८-१९७१=३१

कुल योग ३९+३१+३१=१०१

योगफल १०१ में २ का भाग दिया तो शेष १ रहा, अत: १४-८-७१ से १४-९-७१ तक जयपुर में चावलों का भाव सामान्यत: तेजी पर ही रहेगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अंकों के माध्यम से हम अपनी कई समस्याओं का निपटारा कर सकते हैं, तथा साथ-ही-साथ अज्ञात भविष्य को भी समझने का प्रयत्न कर सकते हैं। इस प्रकार से अंक-विज्ञान हमारे लिए निस्सन्देह उपयोगी है।

शुभ-समय

अधिकतर यह प्रश्न उभरकर सामने आता है कि हम प्रत्येक शुभ कार्य के लिए किस तारीख, वार या समय का प्रयोग करें, जिससे हमें शत-प्रतिशत सफलता मिल सके? शुभ कार्य कई हो सकते हैं, यथा किसी अधिकारी से मिलने किस तारीख को या वार को जावें? कब पत्र लिखें जिसका पूर्णत: प्रभाव पड़े? परीक्षा का फ़ॉर्म कब भरें? प्रेमी या प्रेमिका से मिलने का कौन-सा समय निर्धारित करें? दुकान का मुहूर्त कब करें? ये और ऐसे कई प्रश्न हैं जिनका समाधान जरूरी है।

जन्म-तारीख यदि ज्ञात हो तो मूलांक ज्ञात किया जा सकता है। १ से ९ तक के अंक मूलांक होते हैं, इसके बाद के अंकों को जोड़कर मूलांक बनाये जाते हैं, उदाहरणार्थ—किसी भी महीने में यदि किसी का जन्म ८ तारीख को होगा, तो उसका मूलांक भी ८ होगा। पर यदि किसी का जन्म २१ तारीख को होगा तो उसका मूलांक २+१=३ होगा।

चूँकि अंग्रेजी पद्धति के अनुसार किसी भी महीने में ३१ दिन से ज्यादा नहीं होते, अत: १ तारीख से ३१ तारीख के मूलांक स्पष्ट किये जा रहे हैं—

जन्म-तारीख	मूलांक
१	१
२	२

३	३
४	४
५	५
६	६
७	७
८	८
९	९
१०	१
११	२
१२	३
१३	४
१४	५
१५	६
१६	७
१७	८
१८	९
१९	१
२०	२
२१	३
२२	४
२३	५
२४	६
२५	७
२६	८
२७	९
२८	१
२९	२
३०	३
३१	४

प्रत्येक व्यक्ति को चाहिये कि वह अपने मूलांक को अच्छी तरह से समझ ले। अब यह स्पष्टीकरण किया जा रहा है कि प्रत्येक जन्म-तारीख के लिए कौन-कौन-सी तारीखें शुभ रहेंगी—

जन्म-तारीख	शुभ तारीखें
१	१, १०, १९, २८
२	२, ११, २०, २९
३	३, १२, २१, ३०
४	४, १३, २२, ३१
५	५,१४,२३
६	६,१५,२४
७	७,१६,२५
८	८,१७,२६
९	९,१८,२७
१०	१,१०,१९,२८
११	२,११,२०,२९
१२	३,१२,२१,३०
१३	४,१३,२२,३१
१४	५,१४,२३
१५	६,१५,२४
१६	७,१६,२५
१७	८,१७,२६
१८	९,१८,२७
१९	१,१०,१९,२८
२०	२,११,२०,२९
२१	३,१२,२१,३०
२२	४,१३,२२,३१
२३	५,१४,२३
२४	६,१५,२४

२५	७,१६,२५
२६	८,१७,२६
२७	९,१८,१९,२८
२८	१,१०,१९,२८
२९	२,११,२०,२९
३०	३,१२,१२,३०
३१	४,१३,२२,३१

उपर्युक्त पद्धति को ध्यान से समझें, अर्थात् जिस व्यक्ति का जन्म १ तारीख को हुआ है, उसके लिए प्रत्येक महीने की १, १०, १९ तथा २८वीं तारीख अत्यन्त शुभ एवं अनुकूल रहेगी। इसी प्रकार अन्य तारीखों के बारे में भी समझना चाहिए।

वार—

नीचे तारीखानुसार बार दिये जा रहे हैं, जो कि उनके लिए सर्वाधिक शुभ एवं श्रेष्ठ हैं।

जन्म-तारीख	सर्वाधिक शुभ बार
१	सूर्य
२	चंद्र
३	गुरु
४	सूर्य
५	बुध
६	शुक्र
७	चंद्र
८	शनि
९	मंगल
१०	सूर्य
११	चंद्र
१२	गुरु
१३	सूर्य
१४	बुध
१५	शुक्र
१६	चंद्र
१७	शनि
१८	मंगल
१९	सूर्य
२०	चंद्र
२१	गुरु
२२	सूर्य
२३	बुध
२४	शुक्र
२५	चंद्र
२६	शनि
२७	मंगल
२८	सूर्य
२९	चंद्र
३०	गुरु
३१	सूर्य

उदाहरणार्थ—जिसका जन्म १ तारीख को हुआ है, उसके लिए सूर्यवार सर्वाधिक श्रेष्ठ रहेगा।

मास—

अंग्रेजी के बारह महीनों में से कौन-कौन-से महीने सर्वाधिक अनुकूल रहेंगे, इसकी जानकारी दी जा रही है—

तारीख	मास
१	मार्च
२	जुलाई
३	नवम्बर
४	जनवरी

५	दिसम्बर
६	फरवरी
७	अप्रैल
८	जून
९	सितम्बर
१०	मई
११	अगस्त
१२	अक्टूबर
१३	मार्च
१४	जुलाई
१५	नवम्बर
१६	जनवरी
१७	दिसम्बर
१८	फरवरी
१९	अप्रैल
२०	जून
२१	सितम्बर
२२	मई
२३	अगस्त
२४	अक्टूबर
२५	मार्च
२६	जुलाई
२७	नवम्बर
२८	जनवरी
२९	दिसम्बर
३०	फरवरी
३१	अप्रैल

उदाहरणार्थ—यदि किसी का जन्म १ तारीख को हुआ है,

तो वर्षभर में सर्वाधिक श्रेष्ठ मास उसके लिए मार्च होगा. इसी प्रकार अन्य के लिए भी जानें।

समय—दिनभर में कौन-सा समय सर्वाधिक अनुकूल एवं उपयुक्त है, इसके लिए राशि का ज्ञान कर लेना चाहिए।

राशियाँ कुल बारह हैं, जो निम्न हैं—

क्रम-संख्या	राशि-नाम	अंग्रेज़ी नाम
१	मेष	Aries
२	वृष	Taurus
३	मिथुन	Gemini
४	कर्क	Cancer
५	सिंह	Leo
६	कन्या	Virgo
७	तुला	Libra
८	वृश्चिक	Scorpio
९	धनु	Sagittarius
१०	मकर	Capricorn
११	कुंभ	Aquorius
१२	मीन	Pisces

नीचे जन्म-तारीख से अंग्रेज़ी पद्धति के अनुसार राशि ज्ञात करने की विधि समझाई जा रही है। उदाहरणार्थ—यदि किसी का जन्म २१ मार्च से २० अप्रैल के बीच किसी भी तारीख को हुआ है, तो उसकी जन्म-राशि मेष होगी।

क्रम-संख्या	जन्म-तारीख से	जन्म-तारीख तक	राशि
१	२१ मार्च से	२० अप्रैल तक	मेष
२	२१ अप्रैल से	२० मई तक	वृष
३	२१ मई से	२० जून तक	मिथुन
४	२१ जून से	२० जुलाई तक	कर्क
५	२१ जुलाई से	२१ अगस्त तक	सिंह

६	२२ अगस्त से	२२ सितम्बर तक	कन्या
७	२३ सितम्बर से	२२ अक्टूबर तक	तुला
८	२३ अक्टूबर से	२२ नवम्बर तक	वृश्चिक
९	२३ नवम्बर से	२० दिसम्बर तक	धनु
१०	२१ दिसम्बर से	१९ जनवरी तक	मकर
११	२० जनवरी से	१८ फ़रवरी तक	कुंभ
१२	१९ फ़रवरी से	२० मार्च तक	मीन

होरा-ज्ञान—होरा का अर्थ है घण्टा। एक दिन-रात में २४ घण्टे होते हैं, अर्थात् २४ होरा होती हैं।

मगर अंक-ज्योतिष में घण्टों की गणना एक बजे से दो बजे तक, या दो बजे से तीन बजे तक नहीं की जाती, अपितु सूर्योदय के समय से गणना की जाती है। उदाहरणार्थ दिल्ली में यदि १८ अक्टूबर ७१ को प्रातः ६-४७ (छः बजकर ४७ मिनट) पर सूर्योदय होता है, तो पहला घण्टा ६-४७ से ७-४७ तक, दूसरा घण्टा या दूसरी होरा ७-४७ से ८-४७ तक। इसी प्रकार, २४वीं होरा दूसरे दिन प्रातः ५-४७ से ६-४७ तक रहेगी।

आप चार्ट को भली प्रकार समझ लें, अर्थात् सूर्यवार को १ ली, ८वीं, १५वीं, तथा २२वीं होरा का स्वामी सूर्य होगा। इसी वार को २, ९, १६ तथा २३वीं होरा का स्वामी शुक्र होगा। इसी दिन ३, १०, १७ तथा २४वीं होरा का स्वामी बुध होगा, इसी प्रकार आगे के दिनों में भी जानें।

अब प्रश्न उठता है कि राशि को कौन-कौन-से ग्रह की होरा अत्युत्तम होती है जिस समय में कार्य करने से सिद्धि ही मिले? आगे राशि तथा शुभ, सामान्य एवं अशुभ होरा का वर्णन किया जा रहा है :—

होरा के अधिपति-ग्रह

इसमें भी प्रत्येक होरा का एक ग्रह-अधिपति होता है। निम्नांकित चार्ट से यह भली प्रकार स्पष्ट हो जाएगा।

वार	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा
	१ ८ १५ २२	२ ९ १६ २३	३ १० १७ २४	४ ११ १८ ×	५ १२ १९ ×	६ १३ २० ×	७ १४ २१ ×
सूर्यवार	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं
चंद्रवार	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु
मंगलवार	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु
बुधवार	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु
गुरुवार	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श
शुक्रवार	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू
शनिवार	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं

होरा-विवरण

क्र. सं.	राशि	शुभ होरा (अनुकूल)	साधारण होरा	अशुभ होरा (प्रतिकूल)
१	मेष	सू.चं.मं.गु.	शु. श.	बु०
२	वृष	बु. शु. श.	मं.गु.	सू. चं.
३	मिथुन	सू. बु. शु.	मं.गु.श.चं.	चं.
४	कर्क	सू. बु. चं.	मं.गु.शु.श.	×
५	सिंह	सू.चं.मं.गु.	बु.	शु. श.
६	कन्या	सू. बु. शु.	मं. श. गु.	चं.
७	तुला	बु. शु. श.	मं. गु.	चं. सू.
८	वृश्चिक	सू.चं.मं.गु.	शु. श.	बु.
९	धनु	सू.चं.मं.गु.	शु.	बु. श.
१०	मकर	बु. शु. श.	गु.	सू. चं. मं.
११	कुम्भ	बु. शु. श.	गु.	सू. चं. मं.
१२	मीन	सू.चं.मं.गु.	श.	बु. शु.

होरा-विवरण को समझ लीजिए। जिस व्यक्ति की मेष राशि है उसके लिए सूर्य, चन्द्र, मंगल तथा गुरु की होरा अनुकूल एवं श्रेष्ठ रहेगी तथा इन होराओं में काम करने से सफलता मिलेगी; शुक्र तथा शनि की होराएँ सामान्य रहेंगी, जो कि न तो शुभ होंगी और न अशुभ, तथा बुध की होरा प्रतिकूल होगी।

इसी प्रकार अन्य राशियों के बारे में भी समझना चाहिए।

पिछले पृष्ठों में साल में कौन-सा मास, कौन-सी तारीख, कौन-सा वार तथा कौन-सा समय श्रेष्ठ होता है, इसकी विस्तृत जानकारी दी है। अब प्रत्येक मूलांकवालों के लिए कौन-कौन-से सन् भाग्योदयकारक रहेंगे, इसकी जानकारी प्रस्तुत की जा रही है—

मूलांक	भाग्योदय
एक	१९१८
	१९२७
	१९३६
	१९४५
	१९५४
	१९६३
	१९७२
	१९८१
	१९९०
दो	१९१९
	१९२८
	१९३७
	१९४६
	१९५५
	१९६४
	१९७३
	१९८२
	१९९१
	२०००
तीन	१९२०
	१९२९
	१९३८
	१९४७
	१९५६
	१९६५

१९७४
१९८३
१९९२

चार

१९२१
१९३०
१९३९
१९४८
१९५७
१९६६
१९७५
१९८४
१९९३

पाँच

१९२२
१९३१
१९४०
१९४९
१९५८
१९६७
१९७६
१९८५
१९९४

छः

१९२३
१९३२
१९४१

१९५०
१९५९
१९६८
१९७७
१९८६
१९९५

सात

१९१५
१९२४
१९३३
१९४२
१९५१
१९६०
१९६९
१९७८
१९८७
१९९६

आठ

१९१६
१९२५
१९३४
१९४३
१९५२
१९६१
१९७०
१९७९
१९८८
१९९७

नौ	१९१७
	१९२६
	१९३५
	१९४४
	१९५३
	१९६२
	१९७१
	१९८०
	१९८९
	१९९८

उपर्युक्त वर्ष भाग्यांक-वर्ष कहे जा सकते हैं। अब आगे प्रत्येक मूलांक का अनुकूल रंग बताया जा रहा है—

मूलांक	अनुकूल
१	पीला
२	हल्का हरा रंग
३	पीला रंग
४	नीला
५	हल्का हरा रंग
६	गुलाबी
७	सफेद
८	काला या नीला
९	लाल

अंक-विद्या और यंत्र-मंत्र

यन्त्र और मंत्रों में अक्षरों या अंकों का प्रयोग केवल भारत में ही नहीं अपितु पाश्चात्य देशों में भी इसका प्रयोग रहा है। सेफेरियल, कीथ प्रभृति विद्वानों ने इसपर काफी प्रकाश डाला है।

सेफेरियल के अनुसार निम्न यन्त्र यदि घर की दीवार पर खोद लें, या किसी कागज पर अथवा ताम्रपत्र पर खोदकर पूजा-गृह में रख दिया जाय, तो घर में सुख-शान्ति एवं धन-धान्य में वृद्धि रहती है—

४	९	२
३	५	७
८	१	६

इसके साथ ही उसने भूत-बाधा-शान्ति, प्रेत-बाधा-शान्ति एवं रोग-शोक-निवारण के लिए भी एक यन्त्र बताया है, जो निम्न है—

३	१	९
६	७	५
२	८	४

जहाँ तक मेरा अनुमान है, ये दोनों ही मन्त्र 'पन्द्रह यन्त्र' के रूपान्तर हैं। भारतीय समाज में भी ऋद्धि-सिद्धि एवं धन-धान्य-वृद्धि के लिए 'पन्द्रहियों यन्त्र' का प्रयोग होता है, जो कि शुद्ध रूप में इस प्रकार है—

८	१	६
३	५	७
४	९	२

यदि उपर्युक्त यन्त्र को किसी दीवार पर बना दिया जाय तो आर्थिक दृष्टि से विशेष लाभ रहता है, यह अनुभूत है।

भारतीय ग्रंथों 'यन्त्र चिन्तामणि' एवं 'वृहद् देवज्ञ रंजन' में भी यन्त्रों के बारे में श्रेष्ठ जानकारी दी हुई है।

नीचे प्रत्येक मूलांकवालों के लिए ध्यान, मन्त्र, बीजमन्त्र, जपसंख्या तथा मन्त्र दे रहा हूँ, जो कि काफी महत्त्वपूर्ण कहे जा सकते हैं—

मूलांक १—

मूलांक एक वालों के प्रधान देवता सूर्य हैं, अतः इन्हें सूर्य का ध्यान करना चाहिए :

मंत्र—

प्रत्यक्ष देवं विशदं सहस्र
मरीचिभिः शोभित भूमि देशम्।
सप्ताश्वगं सध्वज हस्तमाद्य
देवं भजे ऽहं मिहिरं हृदब्जे॥

यदि किसी के लिए यह मन्त्र उच्चारण करना कठिन हो तो वह निम्न बीजमन्त्र का जप करे—

॥ ओ३म् ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः ॥

जपसंख्या—७०००

यंत्र—यदि जप (सात हजार बीजमन्त्र) भी न कर सके तो आगे दिया यन्त्र कागज या ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण करके पूजाघर में रख दे तथा उसकी पूजा करे—

६	१	८
७	५	३
२	९	४

मूलांक २—

मूलांक दो का प्रतिनिधि ग्रह चन्द्रमा तथा प्रधान देवता शंकर है, जिसका ध्यान जीवनोन्नति के लिए परमावश्यक है—

ध्यान—

शंख प्रभं वेणुप्रिय शशांक-
मीशान मौलिस्थितमीड्यरूपम् ।
तमीपतिचामृत सिक्त गात्रं
ध्यायेद् हृदब्जे शशिनं ग्रहेन्द्रम् ॥

जिसके लिए यह ध्यान कठिन हो उसे निम्न बीजमंत्र का जप करना चाहिए—

मंत्र—

॥ ओ३म् श्रीं क्रीं चं चन्द्राय नमः ॥

जपसंख्या—१०,०००

यदि जप करने की भी सुविधा न हो तो उसे आगे दिया चन्द्रयंत्र कागज, भोजपत्र या ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण कर पूजागृह में रखना चाहिए—

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

मूलांक ३—

मूलांक तीन का प्रतिनिधि ग्रह गुरु तथा प्रधान देवता विष्णु है ।

ध्यान—

तेजोमयं शक्ति त्रिशूलहस्तं
सुरेन्द्रसंसेवित पादपद्मम् ।
मेधानिधिं जानुगत द्विबाहुं
गुरुं स्मरे मानसपंकजेऽहम् ॥

यदि यह ध्यान कठिन लगे, तो इन मूलांकवालों को निम्न बीजमन्त्र का जप करना चाहिए—

मंत्र—

॥ ओ३म् बृं बृहस्पतये नमः ॥

जपसंख्या—१६,०००

गुरु यंत्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

उपर्युक्त यन्त्र ताम्रपत्र या भोजपत्र पर उत्कीर्ण करा[illegible] विधिवत् पूजा की जाय, तो निस्सन्देह लाभ रहे।

मूलांक ४—

मूलांक चार का प्रतिनिधि ग्रह हर्षल तथा प्रधान देवता गणपति हैं—

ध्यान—

द्वि चतुर्दशवर्ण भूषिताङ्ग
शशि सूर्याग्निविलोचनं सुरेशम्।
अहि भूषित कंठ मक्ष सूत्र
भ्रमयेत् हृदये गणेशम्॥

जिन व्यक्तियों को यह ध्यान कठिन प्रतीत हो, वे इस बीज-मन्त्र का प्रयोग करें—

बीजमंत्र—

॥ ओ३म् श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये नमः॥

जपसंख्या—१८,०००

हर्षल यंत्र

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

उपर्युक्त यन्त्र की पूजा करने से सर्व मनोरथ सिद्ध होते हैं।

मूलांक ५—

मूलांक ५ का प्रतिनिधि ग्रह बुध एवं प्रधान देवता लक्ष्मी है।

ध्यान—

त्रैलोक्य पूजिते देवि कमले विष्णुवल्लभे।
यथात्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा॥

ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चलांभूतिर्हरिप्रिया।
पद्मा पद्मालया संपदुच्चैः श्रीः पद्मधारिणी॥

द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मी संपूज्य यः पठेत्।
स्थिरा लक्ष्मीर्भवेत्तस्य पुत्रदारादिभिः सह॥

बीजमंत्र—

॥ ओ३म् श्रीं श्रीं श्रीं कमले कमलालये
प्रसीद प्रसीद श्री ओ३म् महालक्ष्म्यै नम: ॥

जपसंख्या—२१ हजार

बुध यंत्र

६	४	११
१०	८	६
५	१२	७

उपर्युक्त यंत्र को कागज, भोजपत्र या ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण कराकर पूजास्थान में रक्खें, तो निश्चय ही लक्ष्मी एवं धनधान्य से सम्पन्न होता है।

मूलांक ६—

मूलांक ६ का प्रतिनिधि ग्रह शुक्र एवं प्रधान देवता कार्तवीर्यार्जुन है।

ध्यान

सहस्र भुजमंडली जितसमी वैरनाधिपं
हिमांशु सदृशाननं धृत सहस्र तूर्णीकरम्।
सिताम्बरधर सदा तुरगराज मध्यस्थितं
स्मरामि भुवनाधिपं हृदि तु कार्तवीर्यार्जुनम् ॥

बीजमंत्र—

॥ ओ३म् भां भां भां हां हां हां हें हें हें स्वाहा ॥

शुक्र यंत्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

उपर्युक्त यंत्र अत्यन्त प्रभावशाली है। इसे कागज, भोजपत्र या ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण कराकर नित्य इसकी पूजा की जाय, तो मूलांक ६ वालों के लिए यह सर्वसुखकारी एवं सुख-सौभाग्य-वर्धक है।

मूलांक ७—

मूलांक सात का प्रतिनिधि ग्रह वरुण तथा प्रधान देवता नृसिंह है—

ध्यान

एषांकांशु परेश भाल फलको
बालार्क कोटि प्रभो।
ज्वाला बद्ध महार्घ रत्न निचयो
कंदर्प दर्पोज्ज्वलाम् ॥

बीजमंत्र—

॥ ओ३म् नृं नृं नृं नृसिंहाय नमः ॥

जपसंख्या—७,०००

वरुण यंत्र

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

उपर्युक्त यंत्र को ताम्रपत्र पर अंकित कराकर नित्य इसकी पूजा की जाय, तो निस्सन्देह सफलता प्रदान करने में समर्थ है।

मूलांक ८—

मूलांक ८ का प्रतिनिधि ग्रह शनि एवं प्रधान देवता भी शनि ही है।

ध्यान—

नीलांजनाभं मिहिरेष्ट पुत्रं
ग्रहेश्वरं पाश भुजंगपाणिम्।
सुरा सुराणां भयदं द्विबाहुं
स्मरे शनि मानस पंकजेऽहम्॥

बीजमंत्र—

॥ ओ३म् ऐं ह्रीं श्री शनैश्चराय नमः ॥

जपसंख्या—१६,०००

शनि यंत्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

उपर्युक्त यंत्र को ताम्रपत्र पर अंकित करके पूजागृह में रख दिया जाय, एवं नित्य इसकी पूजा-अर्चना करें, तो सभी कष्ट दूर होकर सुख, शान्ति, सौभाग्य, सम्पन्नता प्राप्त होती है।

मूलांक ९—

मूलांक ९ का प्रतिनिधि ग्रह मंगल एवं प्रधान देवता हनुमान है।

ध्यान—

रामेष्ट मित्र जगदेक वीरं
प्लवंग राजेन्द्र कृत प्रणामम्।
सुमेरु शृङ्गाग्र चिन्त्यमाद्यं
हृदि स्मरेऽहं हनुमन्तमीड्यम्॥

बीजमंत्र—

॥ ओम् ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय नमः ॥

जपसंख्या—७,०००

मंगल यंत्र

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

उपर्युक्त यंत्र को नौ मूलांक वाले यदि ताम्रपत्र, कागज या भोजपत्र पर उत्कीर्ण कराकर पूजाघर में रखें, तो उनके सभी मनोरथ सिद्ध हों, इसमें सन्देह नहीं।

वस्तुतः गत पृष्ठों पर जो यन्त्र एवं मंत्र दिये गये हैं, वे अनुभूत होने के साथ-साथ अत्यन्त उपयोगी एवं सिद्धिप्रद हैं। अभी तक यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रविद्या गोपनीय रहने से ये प्रकाश में नहीं आ सके।

यदि पाठक निर्देशानुसार इनका उपयोग करें, तो वे जीवन में समस्त सुखों का भोग करें एवं पूर्ण सफलता का वरण करें, यह ध्रुव सत्य एवं अनुभवगम्य है।

○

व्यक्तिगत अंक

व्यक्तिगत [illegible] व्यक्ति के अपने अंक होते हैं जिन [illegible] अपने [illegible] के अर्थों को [illegible] स्पष्ट कर लेना चाहिए।

नीचे अंग्रेजी के प्रत्येक अक्षर के व्यक्तिगत अंक दिये जा रहे हैं—

अंग्रेजी अक्षर	हिन्दी उच्चारण	अंक स्वर
A	ए	१
B	बी	२
C	सी	३
D	डी	४
E	ई	५
F	एफ	६
G	जी	७
H	एच	८
I	आई	९
J	जे	१
K	के	२
L	एल	३
M	एम	४
N	एन	५
O	ओ	६
P	पी	७

Q क्यू ८
R आर ९
S एस १
T टी २
U यू ३
V वी ४
W डब्ल्यू ५
X एक्स ६
Y वाई ७
Z जेड ८

व्यक्ति के नाम का प्रभाव जीवन-भर उसके इर्द-गिर्द चक्कर लगाता रहता है तथा उसका सम्बन्ध व्यक्ति के जीवन से बना ही रहता है। मिस्टर 'ले' के अनुसार—

"In the beginning was the word, and the word was with God, and the word was God.........and without the word was not anything made that hath been made."

अधिकांश व्यक्तियों के दो नाम होते हैं। एक मूल नाम तथा दूसरा प्रचलित नाम। मूल नाम अधिकांशतः गोपनीय एवं प्रच्छन्न रहता है तथा प्रचलित नाम सार्वजनिक एवं ज्ञातव्य। उदाहरणार्थ के० सी० बाफना नाम है, जो प्रचलित है और अधिकतर लोगों को ज्ञात भी है, जब कि मूल नाम कैलाशचन्द्र बाफना भी हो सकता है और किशोरचन्द बाफना भी और यह मूल नाम बहुत ही कम लोगों को ज्ञात होगा।

महात्मा गाँधी का पूरा नाम मोहनदास कर्मचन्द गाँधी था, पर वे मूल नाम की अपेक्षा प्रचलित नाम—महात्मा गाँधी से ही

अधिक विख्यात हैं।

किसी भी व्यक्ति के व्यक्तिगत अंक ज्ञात करने के लिए व्यक्ति के नाम के अक्षरों को अंकों में बदल लेना चाहिए। उदाहरणार्थ महात्मा गांधी के नाम को व्यक्तिगत अंकों में बदलना है तो,

MAHATMA GANDHI

महात्मा गांधी

M	एम	४
A	ए	१
H	एच	८
A	ए	१
T	टी	२
M	एम	४
A	ए	१
		२१ योग
G	जी	७
A	ए	१
N	एन	५
D	डी	४
H	एच	८
I	आई	९
		३४

कुल योग २१+३४=५५

५+५=१०

१+०=१

=१

इस प्रकार महात्मा गांधी का व्यक्तिगत अंक १ होगा।

एक और उदाहरण लें :

OMPRAKASH SHARMA

ओमप्रकाश शर्मा

O	ओ	६
M	एम	४
P	पी	७
R	आर	९
A	ए	१
K	के	२
A	ए	१
S	एस	१
H	एच	८
		३९
S	एस	१
H	एच	८
A	ए	१
R	आर	९
M	एम	४
A	ए	१
		२४

३९+२४=६३

६+३=९
=९

इस प्रकार ओमप्रकाश शर्मा का व्यक्तिगत अंक ९ है।

इस जानकारी को मैं आगे बढ़ाऊँ, इससे पहले अंकों का पारस्परिक सम्बन्ध स्पष्ट कर लेना आवश्यक है, जिससे फलितार्थ अधिक स्पष्ट हो सकेगा।

व्यक्तिगत अंक १ के लिए

१	शत्रुतापूर्ण।
२	ईर्ष्यालु, शत्रुतापूर्ण।
३	मित्र, सहायक।
४	परेशानी तथा बाधाएँ देने वाला।
५	मित्र।
६	ऋणात्मक, व्यय बढ़ाने वाला।
७	मित्र।
८	अत्यन्त शत्रु।
९	सम (न शत्रु, न मित्र)

व्यक्तिगत अंक २ के लिए

१	प्रबल शत्रु।
२	शुभ।
३	सम, न अच्छा, न बुरा।
४	मित्र।
५	सहायता देने वाला।
६	अनुकूल।
७	प्रबल शत्रु।
८	मित्रवत्।
९	शुभ फलदायक।

व्यक्तिगत अंक ३ के लिए

१ मित्र ।
२ शत्रु ।
३ व्यवधानपूर्ण ।
४ अतिशत्रु ।
५ बाधाएँ देने वाला ।
६ मित्रवत् ।
७ सम ।
८ सामान्य शुभ ।
९ पूर्ण सहायता देने वाला ।

व्यक्तिगत अंक ४ के लिए

१ अति शत्रु ।
२ मित्र ।
३ सम ।
४ मददगार ।
५ प्रबल मित्र ।
६ सम, न शुभ, न अशुभ ।
७ अतिशत्रु ।
८ न शुभ, न अशुभ ।
९ शत्रु ।

व्यक्तिगत अंक ५ के लिए

१ मित्र ।
२ शुभ ।
३ प्रबल शत्रु ।
४ सामान्य ।
५ प्रबल मित्र ।

६ सामान्य ।

७ सम, न शत्रु, न मित्र ।

८ शुभ ।

९ शत्रु ।

व्यक्तिगत अंक ६ के लिए

१ मित्र ।

२ शत्रु ।

३ सहायक ।

४ प्रबल शत्रु ।

५ सामान्य ।

६ हितैषी ।

७ सामान्य शुभ फलदायक ।

८ सम ।

९ न शत्रु, न मित्र ।

व्यक्तिगत अंक ७ के लिए

१ मित्र ।

२ शत्रु ।

३ प्रबल सहायक ।

४ प्रबल शत्रु ।

५ सामान्य ।

६ शुभ ।

७ शत्रु ।

८ न शुभ, न अशुभ ।

९ समभाव ।

व्यक्तिगत अंक ८ के लिए

१ कठिनाइयाँ उत्पन्न करने वाला ।

१ अनुकूल ।
२ सम ।
३ शत्रु ।
४ मित्र ।
५ प्रबल सहायक ।
६ शुभ ।
७ प्रबल शत्रु ।
८ ईर्ष्यालु ।

व्यक्तिगत अंक ९ के लिए

१ मित्र ।
२ शुभ फलदायक ।
३ सहायक ।
४ प्रबल शत्रु ।
५ अनुकूल ।
६ पूर्ण मददगार ।
७ सहायक ।
८ शत्रु ।
९ सामान्य ।

ऊपर प्रत्येक व्यक्तिगत अंक का अन्य अंकों से [illegible] सम्बन्ध है, स्पष्ट किया गया है । इसका उपयोग पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका, व्यापार, भागीदार, फर्म आदि के उपयोग में किया जा सकता है । नीचे, मैं कुछ उदाहरण देकर इसे और स्पष्ट करने का प्रयत्न कर रहा हूँ ।

पति-पत्नी मान लो कि पति का नाम मदन गोपाल तथा पत्नी का नाम सुषमा है तो इन दोनों का पारस्परिक सम्बन्ध कैसा रहेगा, इसे व्यक्तिगत अंकों के आधार पर इस प्रकार स्पष्ट

…या जा सकता है ।

पति—मदन गोपाल ।

MADAN GOPAL

M	एम	४
A	ए	१
D	डी	४
A	ए	१
N	एन	५
G	जी	७
O	ओ	६
P	पी	७
A	ए	१
L	एल	३

कुल योग = ३९

३ + ९ = १२ = १ + २ = ३

मदन गोपाल के व्यक्तिगत अंक होंगे = ३

SUSHMA

S	एस	१
U	यू	३
S	एस	१
H	एच	८
M	एम	४
A	ए	१

कुल योग = १८

१ + ८ = ९

सुषमा का व्यक्तिगत अंक ९ होगा । अब प्रश्न उठता है कि

इन दोनों का सम्बन्ध कैसा रहेगा। पहले मदनगोपाल के लिये देखें कि सुषमा का व्यवहार उसके प्रति कैसा रहेगा। मदनगोपाल का व्यक्तिगत अंक ३ है। तीन व्यक्तिगत अंक के फलकथन में ६ का व्यवहार (सुषमा के अंक ६ हैं) लिखा है "पूर्ण सहायता देने वाला" अर्थात् सुषमा मदनगोपाल के जीवन को व्यवस्थित व उन्नत करने में पूर्ण सहायता देगी। सुषमा के अंक ६ के फलकथन खंड में ३ का फल देखा तो पाया "सहायक" अर्थात् मदनगोपाल का व्यवहार सुषमा के प्रति सहायक एवं अनुकूल बना रहेगा।

भागीदार—हरिमोहन तथा किशनचन्द साझेदारी में व्यापार करना चाहते हैं, इन दोनों में कितनी और कैसी निभेगी?

हरिमोहन

HARI MOHAN

H	एच	८
A	ए	१
R	आर	९
I	आई	९
M	एम	४
O	ओ	६
H	एच	८
A	ए	१
N	एन	५

कुल योग = ५१

५ + १ = ६

हरिमोहन के व्यक्तिगत अंक = ६

KISHAN CHANDRA

K	के	२
I	आई	९
S	एस	१
H	एच	८
A	ए	१
N	एन	५
C	सी	३
H	एच	८
A	ए	१
N	एन	५
D	डी	४
R	आर	९
A	ए	१

कुल योग = ५७

५ + ७ = १२ = १ + २ = ३

किशनचन्द्र के व्यक्तिगत अंक ३ हुए।

अब फलादेश देखा, पहले हरिमोहन के अंक ६ से अंक ३ का फलादेश देखा तो उत्तर मिला "सहायक"।

अब अंक ३ से ६ का फलादेश देखा तो उत्तर मिला "मित्रवत"।

इसका अर्थ हुआ, जीवन में दोनों मिलकर रह सकेंगे, सुचारु रूप से कार्य चला सकेंगे।

उदाहरण—सेठ प्रभुलाल भार्गवी एक फर्म की स्थापना करना चाहते हैं तथा फर्म का नाम रखना चाहते हैं "अरविन्द"

५. SAPHIRE — सेफायर—नीलम

६. TOPAZ — टोपाज—पुखराज

७. OPAL — ओपल—ताम्र

विधि—पहले व्यक्ति के नाम की संख्या बनायें। फिर वह जिस रत्न का नाम ले, उसकी संख्या बनायें और तब इन दोनों के जोड़ में जिस दिन प्रश्न पूछा हो, उस तारीख को जोड़ें और कुल योग में ३ का भाग दें। १ शेष बचे तो कार्यसिद्धि, २ बचे तो असफलता तथा ० शून्य शेष तो कार्य सिद्धि में परेशानी हो।

नामाक्षर—

A	ए	१
B	बी	२
C	सी	३
D	डी	४
E	ई	५
F	एफ	६
G	जी	७
H	एच	८
I	आई	९
J	जे	१
K	के	[illegible]
L	एल	३
M	एम	४
N	एन	५
O	ओ	६
P	पी	७

Q	क्यू	८
R	आर	९
S	एस	१
T	टी	२
U	यू	३
V	वी	४
W	डब्ल्यू	५
X	एक्स	६
Y	वाई	७
Z	जैड	८

उदाहरण—जगनप्रसाद (JAGAN PRASAD) ने २१ तारीख को प्रश्न किया कि क्या मैं परीक्षा में सफल होऊँगा।

रत्न-नाम में उसने हीरा DIAMOND (हीरे) का नाम लिया।

जगनप्रसाद के अंक

J	जे	१
A	ए	१
G	जी	७
A	ए	१
N	एन	५
P	पी	७
R	आर	९
A	ए	१

S	एस	१
A	ए	१
D	डी	४

कुल योग = ३८

अब हीरे के अंक लिए

D	डी	४
I	आई	१
A	ए	१
M	एम	४
O	ओ	६
N	एन	५
D	डी	४

कुल योग ३३

दोनों का योग ३८+३३=७१

२१ तारीख वाली ७१+२१=९२

९२÷३ , शेष रहे २

अतः जगनप्रसाद परीक्षा में सफल न हो सकेंगे।

इसी प्रकार अन्य किसी भी प्रश्न का हल जाना जा सकता है।

अंक और रोग

इसके लिये मूलांकों का ही प्रयोग करते हैं। उदाहरणार्थ जिसका जन्म २३ तारीख को हुआ है उसका मूलांक २+३=५ होगा।

मूलांक—१

ये व्यक्ति अधिकतर हृदय के मरीज होते हैं तथा हार्टअटैक, हृदय रोग आदि से पीड़ित रहते हैं।

उपासना—सूर्य की उपासना तथा उगते सूर्य का दर्शन करें।

व्रत—रविवार का व्रत करें, एक समय भोजन करें, इस दिन नमक न खायें।

रंग—पीला रंग।

रत्न—माणिक्य, जिसे अंग्रेजी में रूबी कहते हैं।

धातु—स्वर्ण।

मूलांक—२

ये व्यक्ति अधिकतर पेट के रोगों से ग्रस्त रहते हैं। अपच, गैस बनना व मंदाग्नि आदि न्यूनाधिक रूप से बनी रहती है।

उपासना—शंकर की उपासना करें तथा नित्य शिव के मन्दिर में जाकर शिव स्नान करायें।

व्रत—सोमवार का व्रत रक्खें तथा उसके साथ ही साथ पूर्णिमा एवं प्रदोष का व्रत भी रक्खें।

रंग—हल्का हरा रंग।

रत्न—मोती, जिसे अंग्रेजी में (Pearl) पर्ल कहते है।

धातु—चांदी।

मूलांक—३

इससे सम्बन्धित व्यक्ति के स्नायु सन्धान कमजोर ही रहते है। हड्डियों में दर्द, थकावट आदि स्वाभाविक ही है।

उपासना—विष्णु की उपासना करें, पूर्णिमा का व्रत करें व सत्यनारायण की कथा करें।

व्रत—पूर्णिमा का व्रत।

रंग—पीला रंग।

रत्न—पुखराज, जिसे अंग्रेजी में (Topaz) कहते है।

धातु—स्वर्ण।

मूलांक—४

मूलांक चार से सम्बन्धित व्यक्ति अधिकतर एनीमिया से पीड़ित रहते है तथा न्यूनाधिक रूप में यह रोग जीवन भर इन्हे लगा रहता है।

उपासना—इन्हें गणेश जी की उपासना करनी चाहिए तथा घर में या बैठक में गणेश का भव्य चित्र लगाना चाहिए।

व्रतोपवास—अच्छा हो यदि ये गणेश चतुर्थी का व्रत रखें।

रंग—नीला चमकदार रंग।

रत्न—आपका प्रधान रत्न नीलम है, जिसे अंग्रेजी में सेफायर टरक्यूज Sapphire turquoise कहते हैं।

धातु—पंचधातु से निर्मित मुद्रिका।

मूलांक—५

फ्लू, जुकाम आदि रोग न्यूनाधिक रूप से इन्हें लगे ही रहते हैं, अतः जहाँ तक हो सके, इन्हें इस स्थिति से बचना चाहिए।

उपासना—प्रधान देवता लक्ष्मी है, जिसकी उपासना जीवन के लिए परमोपयोगी है।

व्रत—आप पूर्णिमा का व्रत करें तथा सत्यनारायण की कथा श्रवण करें।

रंग—आपके लिए हल्का हरा रंग सौभाग्यवर्धक है।

रत्न—आपके लिए उपयोगी रत्न पन्ना है।

धातु—स्वर्ण।

मूलांक—६

मूलांक ६ से प्रभावित व्यक्ति अधिकतर फेफड़ों के रोग से पीड़ित रहते है तथा उनकी मृत्यु भी किसी ऐसे ही रोग के कारण

[illegible] है।

उपासना—आपके प्रधान देवता कार्तवीर्यार्जुन हैं, जिनकी उपासना जीवनोन्नति के लिए परमावश्यक है।

व्रत—शुक्रवार का व्रत करें। स्त्रियाँ यदि सन्तोषी माता का व्रत करें तो अधिक-अच्छा रहेगा।

रंग—हल्का नीला रंग।

रत्न—[illegible] होगा। इसे [illegible] में डायमण्ड Diamond [illegible] है।

धातु—स्वर्ण।

मूलांक—७

मूलांक-७ से प्रभावित व्यक्ति अधिकतर चर्मरोग से पीड़ित [illegible] तथा चर्म सम्बन्धी कोई न कोई बीमारी इन्हें बनी रहती है।

उपासना—आपके प्रधान देवता नृसिंह हैं, जिसकी उपासना जीवन में उन्नति, सुख एवं ऐश्वर्य के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

व्रत—मंगलवार का व्रत एवं हनुमान जी के दर्शन आपके लिए अनुकूल रहेंगे।

रंग—सफेद।

रत्न—प्रधान रत्न लहसनिया है, जिसे अंग्रेजी में Cat's eye stone (कैट्स आइ स्टोन) कहते हैं।

धातु—स्वर्ण।

मूलांक—८

मूलांक ८ से प्रभावित व्यक्ति लीवर से परेशान रहते हैं तथा इनसे सम्बन्धित जो भी बीमारियाँ होती हैं वे इन्हें घेरे रहती हैं।

उपासना—शनि देव की उपासना आवश्यक है।

व्रत—शनिवार को व्रत रखें, एक समय भोजन करें।

रंग—काला।

रत्न—नीलम, जिसे अंग्रेजी में सेफायर टरक्यूज Sapphire turquoise कहते हैं।

धातु—लोह।

मूलांक—९

मूलांक ९ से प्रभावित व्यक्ति 'मस्सा' से पीड़ित रहते हैं तथा इस सम्बन्ध में कष्ट न्यूनाधिक रूप से बना रहता है।

उपासना—अच्छा हो यदि आप हनुमान का इष्ट रखें व उनकी पूजा करें।

व्रतोपवास—प्रत्येक मंगलवार को एक समय भोजन करें व शाम को हनुमान के दर्शन करें।

रंग—लाल।

रत्न—मूँगा। अंग्रेजी में इसे Coral कहते हैं।

धातु—स्वर्ण।

अंक ज्योतिष : भविष्यदर्शन

अंक ज्योतिष भी अपने-आपमें पूर्णतया ज्योतिष है और इसके माध्यम से भी भविष्यदर्शन स्पष्ट रूप से किया जा सकता है। यद्यपि बहुत ही कम ग्रन्थों में इस प्रकार का विवेचन है कि किस प्रकार से हम अंक ज्योतिष के माध्यम से जीवन के भविष्य को स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं।

जैसा कि मैंने बताया है कि एक से नौ तक के अंक अपने-आपमें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं और सारा अंक ज्योतिष इन्हीं अंकों के इर्दगिर्द घूमता है। अंक ज्योतिष को समझने से पूर्व यह ज्ञात कर लेना चाहिए कि स्वयं का अंक कौन-सा है। स्वयं के अंक का आधार जन्म-तारीख होती है। इसमें महीना व सन् की गणना नहीं की जाती। नीचे मैं प्रत्येक अंक, संबंधित ग्रह तथा संबंधित तारीखें स्पष्ट कर रहा हूँ। अंग्रेजी पद्धति के अनुसार किसी भी महीने की निम्नलिखित तारीखों में व्यक्ति का जन्म हुआ हो तो उससे संबंधित अंक ही उसका अंक कहलाएगा और उसी के द्वारा भविष्य स्पष्ट किया जाता है।

क्रम संख्या	अंक	ग्रह	सम्बन्धित तारीखें
१.	१	सूर्य	१, १०, १९, २८
२.	२	चन्द्र	२, ११, २०, २९
३.	३	गुरु	३, १२, २१, ३०
४.	४	हर्षल	४, १३, २२, ३१
५.	५	बुध	५, १४, २३
६.	६	शुक्र	६, १५, २४
७.	७	वरुण	७, १६, २५
८.	८	शनि	८, १७, २६
९.	९	मंगल	९, १८, २७

उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति का जन्म किसी भी महीने की १८ तारीख को हुआ है तो उसका अंक ६ होगा तथा उससे सम्बन्धित ग्रह मंगल होगा। इसी प्रकार अपना अंक ज्ञात कर सम्बन्धित भविष्य-फल जाना जा सकता है।

भविष्य-फल को समझने से पूर्व ग्रहों के परस्पर मित्र आदि की जानकारी भी ले लेनी चाहिए। नीचे मैं प्रत्येक ग्रह व उसके मित्र, शत्रु व सम आदि का विवेचन कर रहा हूँ। सम से तात्पर्य जो न तो मित्र हो और न शत्रुवत् भावना रखता हो।

क्र० सं०	ग्रह	मित्र	शत्रु	सम
१.	सूर्य	चन्द्र, मंगल, गुरु	शुक्र, शनि	बुध
२.	चन्द्र	रवि, बुध	—	शुक्र, मंगल, गुरु, शनि
३.	मंगल	सूर्य, चन्द्र, गुरु	बुध	शुक्र, शनि
४.	बुध	सूर्य, शुक्र,	चन्द्रमा	मंगल, गुरु, शनि
५.	गुरु	सूर्य, चन्द्र, मंगल	बुध, शुक्र	शनि
६.	शुक्र	बुध, शनि	सूर्य, चन्द्र	मंगल, गुरु
७.	शनि	बुध, शुक्र	सूर्य, चन्द्र, मंगल	गुरु
८.	हर्षल	बुध, शनि, शुक्र	सूर्य, चन्द्र, मंगल	गुरु
९.	वरुण	सूर्य, चन्द्र	बुध, शुक्र, मंगल	शनि

यहाँ पर अंकों के माध्यम से जब समझना हो तो ग्रहों से सम्बन्धित अंक को आधार बनाकर समझ लेना चाहिए। उदाहरण के लिए जिसके जीवन में एक का अंक महत्त्वपूर्ण हो अर्थात् जिसका जन्म १, १०, १९, २८ तारीख में से किसी एक तारीख को हुआ हो तो उसका अंक एक कहलाएगा, उसका ग्रह सूर्य होगा तथा उसके मित्र अंक २, ३ तथा ९ होंगे। इसी प्रकार उसके शत्रु ६ और ८ होंगे और सम भाव ५ से होगा, अर्थात् उसे अपने जीवन में किसी से भी सम्बन्ध स्थापित करने से पूर्व सामने वाले व्यक्ति, मित्र, पत्नी, पति, प्रेमी, प्रेमिका, अधिकारी, नौकर आदि की जन्म-तारीख से उसका अंक समझ लेना चाहिए और यह देख लेना चाहिए कि उसका जन्म-अंक क्या आपके

अंक का मित्र है या नहीं।

अंकों के माध्यम से दैनिक और भारतीय भविष्यफल को देखा जा सकता है। दैनिक भविष्यफल में प्रातः ६ बजे से गणना होती है तथा एक ग्रह की अवधि १ घंटा ३० मिनट तक रहती है। यदि उस समय आपके जन्म-अंक से सम्बन्धित अंक के स्वामी का समय चल रहा है तो वह अनुकूल है और यदि आपके अंक से सम्बन्धित ग्रह के शत्रु ग्रह का समय चल रहा है तो उस समय में किया गया कार्य आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगा। इसी प्रकार सम ग्रह से सम्बन्धित समय से मिश्रित फल प्राप्त हो सकेगा।

दैनिक भविष्यफल

इसमें प्रत्येक वार में अलग-अलग प्रकार से ग्रहों का समय निर्धारित है। नीचे मैं इस सम्बन्ध में तालिका स्पष्ट कर रहा हूँ।

रविवार : दिन

ग्रह	समय
सूर्य	६-०० से ७-३०
शुक्र	७-३० से ९-००
बुध	९-०० से १०-३०
चन्द्र	१०-३० से १२-००
शनि	१२-०० से १-३०
गुरु	१-३० से ३-००
मंगल	३-०० से ४-३०
सूर्य	४-३० से ६-००

रात्रि

ग्रह	समय
गुरु	६-०० से [illegible]
चन्द्र	७-३० से ९-००
शुक्र	९-०० से १०-३०
मंगल	१०-३० से १२-००
शनि	१२-०० से [illegible]
बुध	१-३० से ३-००
सूर्य	३-०० से [illegible]
गुरु	४-३० से ६-००

सोमवार : दिन

ग्रह	समय
चन्द्र	६-०० से ७-३०
शनि	७-३० से ९-००

रात्रि

ग्रह	समय
बुध	६-०० से [illegible]
मंगल	७-३० से [illegible]

गुरुवार : दिन

ग्रह	समय
गुरु	६-०० से ७-३०
मंगल	७-३० से ९-००
सूर्य	९-०० से १०-३०
शुक्र	१०-३० से १२-००
बुध	१२-०० से १-३०
चन्द्र	१-३० से ३-००
शनि	३-०० से ४-३०
गुरु	४-३० से ६-००

रात्रि

ग्रह	समय
चन्द्र	६-०० से ७-३०
शुक्र	७-३० से ९-००
मंगल	९-०० से १०-३०
शनि	१०-३० से १२-००
बुध	१२-०० से १-३०
सूर्य	१-३० से ३-००
गुरु	३-०० से ४-३०
चन्द्र	४-३० से ६-००

शुक्रवार : दिन

ग्रह	समय
शुक्र	६-०० से ७-३०
बुध	७-३० से ९-००
चन्द्र	९-०० से १०-३०
शनि	१०-३० से १२-००
गुरु	१२-०० से १-३०
मंगल	१-३० से ३-००
सूर्य	३-०० से ४-३०
शुक्र	४-३० से ६-००

रात्रि

ग्रह	समय
मंगल	६-०० से ७-३०
शनि	७-३० से ९-००
बुध	९-०० से १०-३०
सूर्य	१०-३० से १२-००
गुरु	१२-०० से १-३०
चन्द्र	१-३० से ३-००
शुक्र	३-०० से ४-३०
मंगल	४-३० से ६-००

शनिवार : दिन

ग्रह	समय
शनि	६-०० से ७-३०
गुरु	७-३० से ९-००
मंगल	९-०० से १०-३०
सूर्य	१०-३० से १२-००
शुक्र	१२-०० से १-३०

रात्रि

ग्रह	समय
बुध	६-०० से ७-३०
सूर्य	७-३० से ९-००
गुरु	९-०० से १०-३०
चन्द्र	१०-३० से १२-००
शुक्र	१२-०० से १-३०

ग्रह	समय	ग्रह	समय
बुध	१-३० से ३-००	मंगल	१-३० से ३-००
चन्द्र	३-०० से ४-३०	शनि	३-०० से ४-३०
शनि	४-३० से ६-००	बुध	४-३० से ६-००

दैनिक भविष्य-फल को समझना आसान है। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि आपकी जन्म-तारीख क्या है और उसका मूलांक क्या है। नीचे मैं तारीख व उससे सम्बन्धित मूलांक स्पष्ट कर रहा हूँ। आपका जन्म चाहे किसी भी महीने में या किसी भी सन् में हुआ हो, पर जन्म-तारीख के आगे अंकित अंक ही आपका मूलांक होगा।

जन्म-तारीख	मूलांक	जन्म-तारीख	मूलांक
१	१	१७	८
२	२	१८	९
३	३	१९	१
४	४	२०	२
५	५	२१	३
६	६	२२	४
७	७	२३	५
८	८	२४	६
९	९	२५	७
१०	१	२६	८
११	२	२७	९
१२	३	२८	१
१३	४	२९	२
१४	५	३०	३
१५	६	३१	४
१६	७		

उदाहरण [illegible] यदि आपका जन्म किसी भी महीने की २६ तारीख [illegible] आपका मूलांक [illegible]